TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS
सप्तगिरि
जुलै १९
तिरुमल-तिरुपति देवस्थान की मास-पत्रिका

श्री अन्नमाचार्य जयन्तुत्सव सचित्र समाचार

ति ति. देवस्थान की ओर से श्री बी रजनीकान्त राव जी को सन्मान करते हुए श्री पी वी आर.के. प्रसादजी ।

दिनाक १३-५-७९ के शाम को श्री सध्यावदन श्रीनिवासराव की सगीत सभा ।
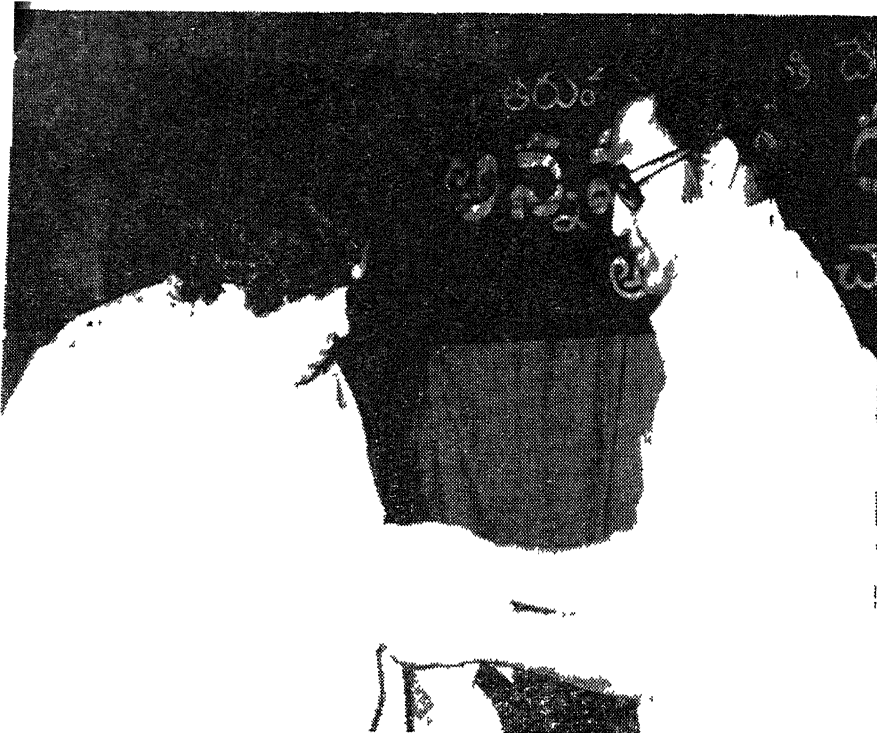
दि. १४-५-७९ को प्रमुख मृदंग कलाकार श्री यल्ला वेकटेश्वररावजी को देवस्थान के आस्थान विद्वान पद से सन्मानित किया गया ।
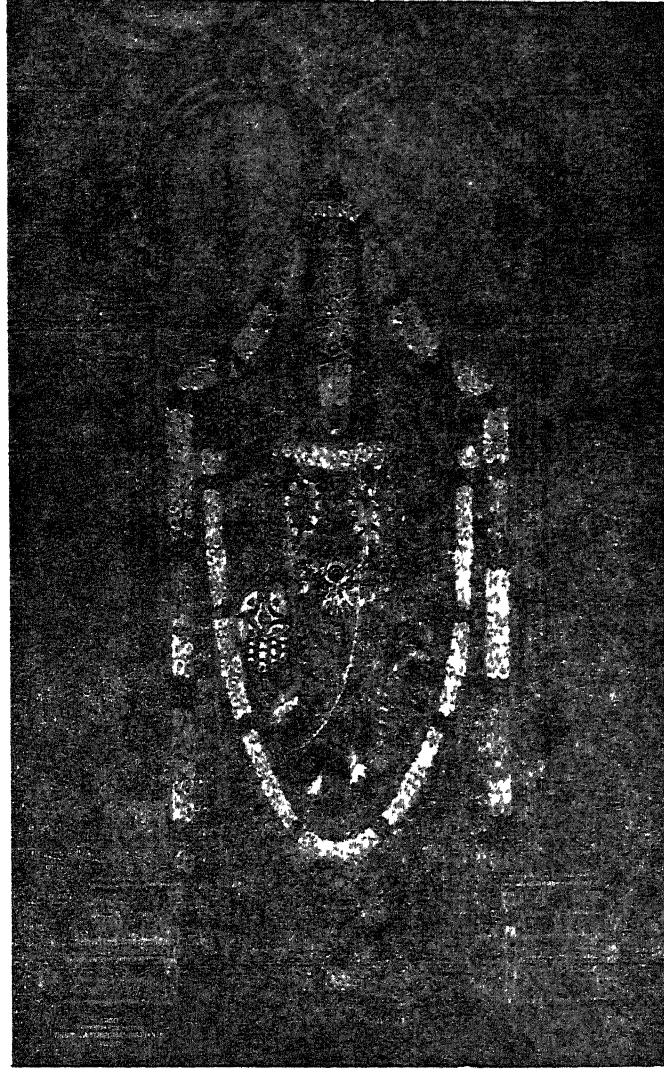
यदस्मृति चकृम किं चिदग्न
उपारिम चरणो जातवेदः ।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः
शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः ॥

—अथर्व, का ७ सू २०६ म १ ।

हे! त्रिकालदर्शी दीप्तिमान प्रभु । अगर असावधानी से हमारे व्यवहार में किसी प्रकार की भूल हो तो हमें दया के साथ क्षमा करें तथा हमें शुभासीस प्रदान करें । हे दयामय भगवान! हम और हमारे मित्रगण सभी लोग धार्मिक तथा भक्ति मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं तथा आपके कृपा कटाक्ष से मोक्ष प्राप्त हो जाये ।

—अथर्व वेद ।

श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

१-३-७९ से

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	शुद्धि
,,	3-45	,,	4-30	,,	. तोमालसेवा
,,	4-30	,,	4-45	,,	. कोलुवु तथा पचागश्रवण
,,	4-45	,	5-30	,,	पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,	12-00	,,	. **सर्वदर्शन**
दोपहर	12-00	,,	1-00	,,	. दूसरी अर्चना
,,	1-00	,,	8-00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8-00	,,	9-00	,,	शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
,,	9-00	,,	12-00	,,	... **सर्वदर्शन**
,,	12-00	,,	12-30	,,	शुद्धि
,,			12-30		. एकान्त सेवा

बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

प्रात	3-00	से	3-30	तक	. सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	. शुद्धि
,,	3-45	,,	4-30	,,	. तोमाल सेवा
,,	4-30	,,	4-45	,,	. कोलुवु तथा पचाग श्रवण
,,	4-45	,,	5-30	,,	. पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	. पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,,	8-00	,,	सहस्र कलशाभिषेक
,,	8-00	रात	8-00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8-00	,,	9-00	,,	. **शुद्धि**
,,	9-00	,,	12-00	,,	**सर्वदर्शन**
,,	12-00	,,	12-30	,,	. शुद्धि

गुरुवार (तिरुप्पावडा)

प्रातः	3-00	से	3-30	तक	... सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	. शुद्धि
प्रात.	3-45	से	4-30	तक	. तोमाल सेवा
,,	4-30	,,	4-45	,,	कोलुवु, तथा पंचागश्रवण
,,	4-45	,,	5-30	,,	... पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	... पहली घंटी, बाली तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,,	8-00	,,	सडलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, अलकरण घंटी इत्यादि
,,	8-00	रात	8-00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8-00	,,	10-00	,,	. शुद्धि इत्यादि पूलगि समर्पण रात का कैंकर्य, घटी
,,	10-00	,,	12-30	,,	. पूलगि सेवा (अर्जित)
,,	12-30	,,	12-45	,,	**शुद्धि**
,,			12-45		. . एकात सेवा

शुक्रवार (अभिषेक)

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	5-00	,,	. सडलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात)
,,	5-00	,,	7-00	,,	अभिषेक (अर्जित)
,,	7-00	,,	8-30	,,	समर्पण
,,	8-30	,,	9-30	,,	तोमाल सेवा अर्चना, घंटी बालि तथा सात्तुमोरै
,,	9-30	,,	10-00	,,	. दूसरी घटी, सात्तुमोरै
,,	10-00	रात	8-00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8-00	,,	9-00	,,	शुद्धि, रात का कैंकर्य
,,	9-00	,	12-00	,,	. **सर्वदर्शन**
,,	12-00	,,	12-30	,,	**शुद्धि**
,,			12-30		. एकात सेवा

सूचना १. उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा। २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/- टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी। ३. रु २५/- के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ में मिलेगी। ४. सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया। ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा। ६. रु २००/- के अमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा। ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा में दर्शनानंतर टिकेट या रु २५/- का टिकेट नही बेचा जायेगा।

—**पेष्कार,** श्री बालाजी का मंदिर, तिरुमल.

सप्तगिरि
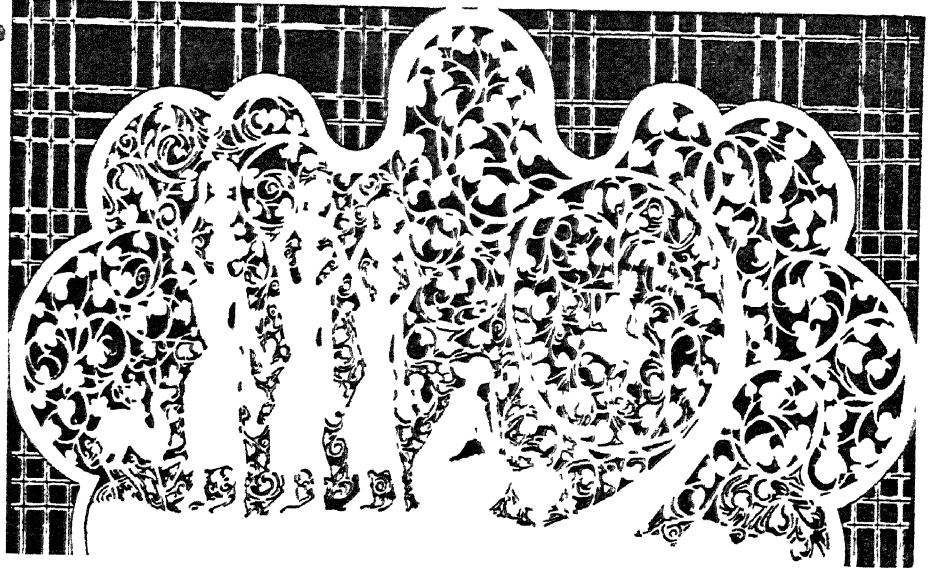
जुलाई १९७९ वर्ष १० अंक २

एक प्रति .... रु. ०-५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६-००

गौरव सपादक
श्री पी. .वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए यस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति. ति. दे. तिरुपति.
दूरवाणी २३२२.

सपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए.,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मनेजर, टी. टी. डी. प्रेस्, तिरुपति.
दूरवाणी २३४०.

अन्नमाचार्य जयन्तुत्सव के सचित्र समाचार—२, ३ कवर पृष्ठ पर देखिए

मुखचित्र: तिरुमल में श्रीवारि आनिवर आस्थानम्

संपादकीय

रेलगाडी निकली। धुआँ उडाते हुए वेग से चलकर अगले स्टेशन में आकर रुकी है। बस! आगे बढ नहीं सकी। वह तो न रुकने का स्टेशन। और न आगे बढने का रास्ता है। परेशान ही परेशान है। सलाह देने का किसी को अधिकार नहीं। आखिर एक ऊपर के स्टेशन से आदेश मिला कि रास्ता बराबर नही है। इसलिए दूसरे रास्ते पर ले चले। आखिर वह गम्यस्थान को पहुँची, बहुत समय के बाद। सभी के चेहरों पर निराशा व निस्पृहता और इधर देखें तो सडे फल।

इसी तरह पालक व्यवस्था भी रेलगाडी के समान होती है। फाइल रूपी डिब्बो में, हजारों लोगों की आशाओं व आवश्यकताओं के लिखित पत्रों को लेकर, अधिकारों की मजलियों को पार करते हुए गम्यस्थान को पहुँचनेवाली रेलगाडी के समान स्वप्न व आशाओं को फलप्रद करनेवाला होता है। उसी प्रकार इसको भी किसी दशा में रुकावट पड गयी या घुमा कर फिर रही तो एक कुछ भी हाथ में नही आता। गम्यस्थान पहुँचने तक सडे फल जैसे बेकाम व निरर्थक हो जाता है। हर कही निराशा व निस्पृह दिखाई पडती हैं। अगर जल्दी में काम पूरा करना चाहे तो, सभी दशाओ में बदलती हुई आवश्यकताओ के अनुसार एकीभाव की जरूरत है।

सच है कि ति. ति. देवस्थान बहुत पहले जब कि उसकी विकास इतनी ज्यादा नहीं थी, तभी के बनाये नियमों के पटरियों पर बढती जानेवाली आवश्यकताओं को लादकर, बिना ठीक रास्ते के होने से परेशान पूर्ण सस्था बन गयी है। इस संस्था के स्वरूप व स्वभाव में जितनी उन्नति हुई, उतनी और किसी सस्था मे नही पायी जाती। सभी से अलग रूप रेखाओ तथा विशेष प्राचुर्य प्राप्त इस संस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए बहुत पहले ही स्वयं प्रतिपत्त होना था। वैसा होना इस सस्था की आज की भलाई के लिए और आगामी दिनों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सस्था में हाल ही में जो परिणाम हुई, वह उस कमी को पूरा कर दिया। नये बनाये गये निर्णायक व निर्वाहक मण्डलि मे देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी, देवादाय शाखा के कमीशनर, आर्थिक शाखा के अब के सचिव के रहने के कारण गलती से भी सही पीछे रह जानेवाली एकपक्षीय निर्णय के बदले अभिन्न व एकग्रीव निर्णय लेने की सम्भावना होती है। तद्वारा विविध जटिल समस्याओं का शीघ्र परिष्कार सम्भव हो सकता है।

देवादाय निधि को आर्थिक सहायता देकर पक्का करने से इस देवस्थान को, अन्य मदिरों के मरम्मत, धर्मशालाएं, कल्याण मण्डप, राम मदिरें आदि के निर्माण करने की भार से मुक्ति मिलती है। इस निधि को कुछ धन दान में देकर आगे से अपने मदिर, धर्मशालाओं, यात्री लोगों के तथा अन्य समस्याओं के परिष्कार के लिए अपनी दृष्टि केंद्रित करने की मौका मिलती है।

धार्मिक प्रचार व पुस्तक प्रकाशन के लिए अलग निधि का भी मंजूर हो गया है। और एक परिवर्तन, श्री वेंकटेश्वर शिष्टाचार विद्य संस्था को बनाना। फलतः कई नामों को रखकर, कई जगहों पर काम करनेवाले वेदोद्धार या धर्माभिवृद्धि कार्यक्रमों के बदले एक ही आशय के सभी सस्थाओं को एक सस्था में एकीकरण करने की सम्भावना होती है।

आश्चर्यजनक कार्य स्थिति, नये रास्ते में आगे बढनेवाली देवस्थान की इस प्रगति पर सभी की दृष्टि केंद्रीकृत है। इन सभी की आशाओं को निराशा न करके, अपने सेवकगण देवस्थान के कर्मचारियों को निर्वहण करने की शक्ति व धैर्य सामर्थ्य प्रदान करने को श्री बालाजी से प्रार्थना करेंगे।

सकल देवता पूजा विधि

(गतांक से)

भवन्ति दैत्याशनिबाणवर्षैः शारं सदाऽहं शरणं प्रपद्ये ॥
रक्षोसुराणां कठिनोग्रकंठच्छेदक्षरत्क्षोणित दिग्ध दारम् ।
तं नंदकं नाम हरेः प्रदीप्तं खड्गं सदाऽह शरणं प्रपद्ये ॥
इम हरे पंचमहायुधाना स्तवं पठेद्योनुदिनं प्रभाते ।
समस्त दुःखानि भयानि सद्य पापानि नश्यन्ति सुखानि सन्ति ॥
वने रणे शत्रुजालाग्नि मध्ये यदृच्छयाऽपत्सुमहा-भयेषु ।
पठेत्विदं स्तोत्रमनाकुलात्मा सुखी भवेत्तत्कृत सर्वरक्ष ॥

श्री लक्ष्मी नृसिंह स्तोत्रम्

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे
भोगींद्र भोगमणि रंजित पुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलबम ॥

लक्ष्मी हृदयम्

समस्तसंपत्सुखदां महाश्रियं
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियम् ।
समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियं
भजाम्यह ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥

तेलुगु मूल :
श्री एस. वी. रघुनाथाचार्य एम. ए.,
एस. वी. यूनिवर्सिटी, तिरुपति

तीसरा परिशिष्ट

(सभी 'अष्टोत्तरशतनामावलियो के प्रत्येक नाम के पहले 'ॐ' तथा अंत में 'नमः' बताना चाहिए)

श्री वेंकटेश्वराष्टोत्तर शतनामावळिः

ॐ वेंकटेशाय नमः
शेषाद्रिनिलयाय
वृषदृग्गोचराय
विष्णवे
सदंजनगिरीशाय
वृषाद्रिपतये
मेरुपुत्रगिरीशाय
सरस्स्वामिततीजुषे
कुमारा कल्पसेव्याय
वज्रिदृग्विषयाय
सुवर्चलासुतन्यस्तसैनापत्यभराय
रामाय
पद्मनाभाय
सदावायुस्तुताय
त्यक्त वैकुण्ठलोकाय
गिरिकुंजविहारिणे
हरिचन्दन गोत्रेन्द्रस्वामिने
शखराजन्यनेत्राब्जविषयाय
वसूपरिचरत्रात्रे
कृष्णाय
अब्धिकन्या परिष्वक्त वक्षसे
वेंकटाय
सनकादिमहायोगि पूजिताय
देजित्वप्रमुखानन्तदैत्य संघ प्रणाशिने
श्वेतद्वीपनसन्मुक्तपूजितांघ्रियुगाय
श्वेतपर्वतरूपत्वप्रकाशनपराय
सानुस्थापितताक्ष्र्याय
ताक्ष्र्याचलनिवासिने
मायानिगूढ विमानाय
गरुडस्कन्धवासिने
अनन्तशिरसे
अनन्ताक्षाय
अनन्त चरणाय
श्रीशैलनिलयाय
दामोदराय
नीलमेघनिभाय
ब्रह्मादिदेवदुर्दर्श विश्वरूपाय
वैकुण्ठागतसद्धेमविमानान्तर्गताय
अगस्त्याचार्यथिताशेष जन दृग्गोचराय
वासुदेवाय
हलये
तीर्थपंचकवासिने
वासुदेव प्रियाय
जनकेष्टप्राणाय
मार्कण्डेयमहातीर्थपुण्यप्रदाय
वाक्पतिब्रह्मदात्रे
चन्द्रलावण्यदायिने
नारायण नगेशाय
ब्रह्मक्लेप्तोत्सवाय
शखचक्रवरानम्रलसत्करवलाय
प्रवन्मृगमदासक्तविग्रहाय

हिन्दी अनुवादक .
सी. रामय्या, तिरुपति

केशवाय
नित्ययौवनमूर्तये
अर्थितर्थप्रदात्रे
विश्वतीर्थाघहारिणे
तीर्थस्वामि सरस्स्नातजनाभीष्ट प्रदायिने
कुमारधारिकावासस्कन्दाभीष्टप्रदायिने
जानुदध्नसमुद्भूतपोत्रिणे
कूर्ममूर्तये
किन्नरद्वन्द्वशापान्तप्रदात्रे
विभवे
वैखनसमुनिश्रेष्ठपूजिताय
सिंहाचल निवासाय
श्रीमन्नारायणाय
सद्भक्तनीलकठार्चनृसिंहाय
कुमदाणगणश्रेष्ठ सैनापत्यप्रदाय
दुर्मेतः प्राणहर्त्रे
श्रीधराय
क्षत्रियान्तकरामाय
मत्स्यरूपाय
पांडवारि प्रहर्त्रे
श्रीकराय
उपत्यकाप्रदेशस्थशंकरध्यातमूर्तये
रुक्मज्जसरसीकूल लक्ष्मीकृत तपस्विने
लसल्लक्ष्मीकरांभोजदत्तकल्हारकस्त्रजे
सालग्राम निवासाय
शुकदृग्गोचराय
नारायणार्थिताशेषजनदृग्विषयाय
मृगयारसिकाय
वृषभासुर हारिणे नमः
अंजनागोत्रपतये
वृषभाचलवासिने
अंजनासुतदात्रे
माधवीयाघ हारिणे
प्रियगुप्रियभक्षाय
श्वेतकोलवराय
नीलधेनुपयोधारानेकदेहोद्भवाय
शंकरप्रियमित्राय
चोलपुत्र प्रियाय
सधर्मिणी सुचैतन्य प्रदात्रे
मधुघातिने
कृष्णाख्यविप्रवेदान्तदेशिकत्वप्रदाय
वराहाचलनाथाय
बलभद्राय
त्रिविक्रमाय
महते
हृषीकेशाय
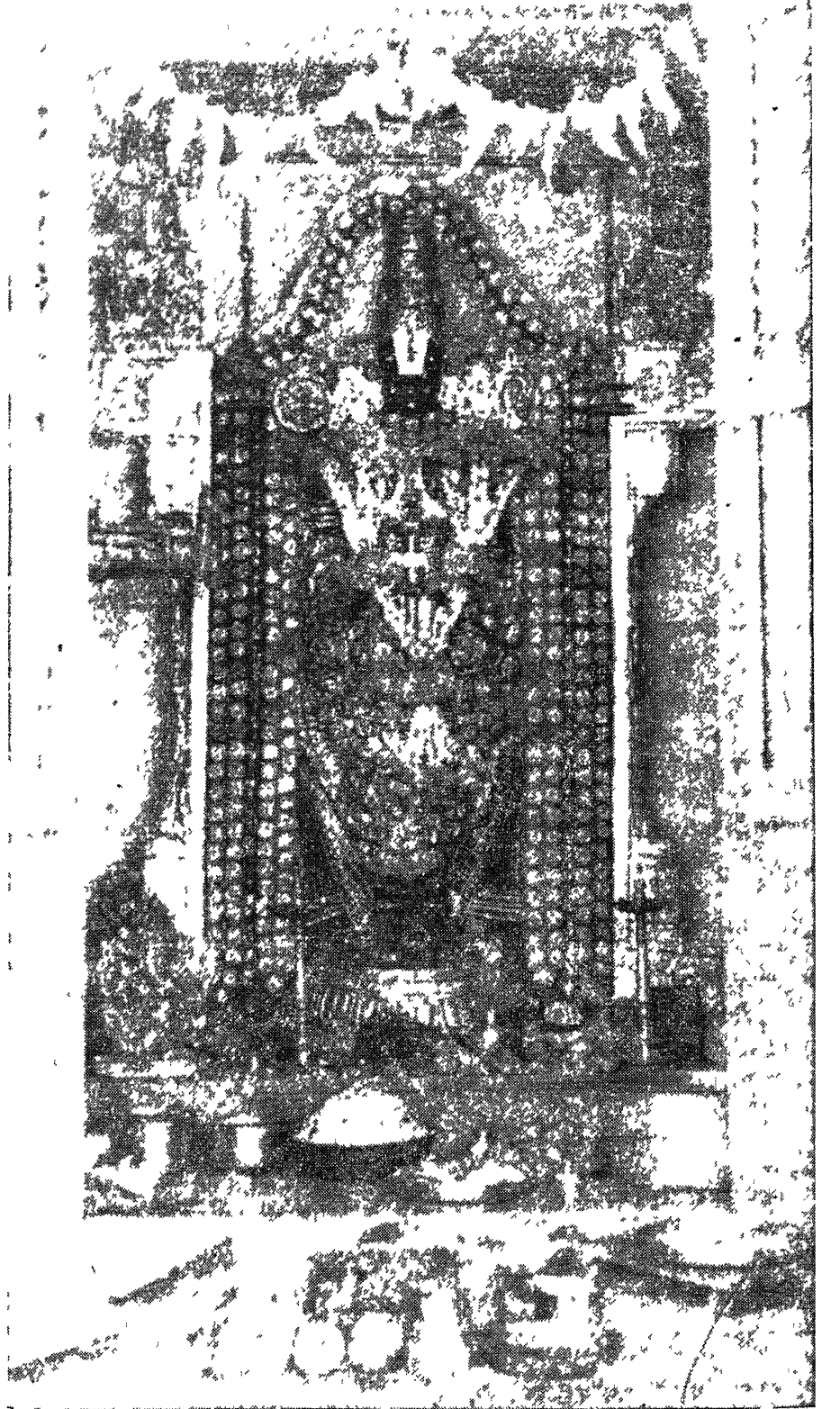
श्री बालाजी का मंदिर, पूना. फोटो : एम. शकर

दुनिया क्यों विभाजित ?

सूरज एक, चांद एक,
नभ में उड्डुगण माल एक,
मानव हृदय का भाव एक,
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
प्रिय का बिछुड़न रूलाती,
मृत्यु का है भय सताती,
प्रणय के मनुहार में सब,
भाव करते एक लय स्वर,
मानव हृदय समान सबके,
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
क्यों किसी को कर विखंडित,
भावनाओं को कर अमर्यादित,
आज का मानव रहा कर,
दूसरों का गर्व रौंदन ।
यही वह है बात जोकि,
सभ्य मानव को सताती ।
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
देखने को हैं चाँद तारे,
दूर नभ के अनगिनत तारे
विज्ञान में स्नात बनने
के लिए हैं खोज करना
सृष्टि की अनगिनत बाते ।

फिर भी मानव दूसरों को,
कर रहा अणु से विमर्दित,
यही है वह बात जो कि
सभ्य मानव को सताती
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
एक ही वायु साँस लेते,
पृथ्वी का फल फूल खाते,
रक्त सबके लाल ही हैं,
शरीर सबके समान ही हैं,
भाव सबके समान ही हैं,
फिर भी मानव कर रहा क्यों
अन्य मानव को अपमानित
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
किसी की माँ, बहिन, बेटी,
किसी की है वही सहचरी,
किसी की है वही भार्या,
किसी की है वही प्रेयसी ।
नारी के हैं रूप अनेक,
फिर भी मानव कर रहा है,
उसी नारी को अपमानित,
बहिन, बेटी को अपमानित ।
आज दुनिया क्यों विभाजित ?
सीता, सावित्री, मैत्रेयी, गार्गी,
द्रौपदी, पार्वती और ब्लावत्सकी,
वही है कुमारी मेरी,
रूप उसके अनेक स्थित,
अनेक रूपों में वही प्रतिष्ठित,

जन्म पाते सब उसी से,
आनद पाते सब उसी से ।
फिर भी मानव कर रहा है
उसी नारी को अपमानित,
कर रहा उसको प्रताडित
आज दुनिया क्यों विभाजित ?
क्या महात्मा, क्या महापुरुष,
क्या नेता, क्या प्रणेता,
क्या गाँधी, क्या ईसा,
क्या जवाहर, क्या मूसा,
जन्म पाते माँ के उदर से,
फिर भी आणुविक युग का मानव,
कर रहा है, बखान अपने,
आप ही निर्माण तन का ।
यही है वह बात जो कि,
सभ्य मानव को सताती ।
फिर भी दुनिया क्यों विभाजित ?
मानस की जटिल-प्रक्रियायें,
पर कर रहे है राजनीति,
किन्तु, अपनी भावनाओं को
स्वयं नहीं वे देख पाते ।
विश्व के मानव हृदय को,
कर रहे हैं अमर्यादित ।
यही है वह बात क्लिष्ट,
जोकि सभ्य मानव को सताती ।
आज दुनिया क्यों विभाजित ?

साहित्यरत्न श्री अर्जुनशरण प्रसाद, एम.ए.,
चक्रधरपुर

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएँ (केशसमर्पण)

केश समर्पण करन का रहस्य मानव के सपूर्ण अहभाव को छोडकर उस मूल विराट की शरण में विनीत भावना से अपने को समर्पित करना ही है । हमारे यहाँ कश समर्पण इसलिए एक प्रचलित प्रथा है ।

लेकिन पारंपरिक एव साप्रदायिक पद्धति में भगवान को केश समर्पण करने से ही मनौती पूरी होगी । यात्रियों की इस प्रमुख मनौती को पूर्ण करने केलिए देवस्थान ने अनेक कल्याण कट्टाओं का प्रबंध किया है । यह विषय विशेष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनधिकारी नाइयों से अन्य जगह सिरमुण्डन कराने से पवित्रता नहीं रहेगी और भक्त की मनौती भी पूरी नहीं होगी । देवस्थान के नियमित नाइयों से सिर मुण्डन करवाने से ही वे केश भगवान को समर्पित किये जायगे ।

इसलिए यात्रियों से निवेदन है कि वे केवल देवस्थान के कल्याण कट्टाओ में ही अपने केश समर्पण करे जहाँ पर अनेक अनुभवी नाई रहते हैं और जिस के नजदीक ही नहाने केलिए नियत शुल्क चुकाने पर गरम पानी देने की व्यवस्था भी है । जो यात्री केश समर्पण काटैज में ही करवाना चाहते हैं, वे देवस्थान के द्वारा इस का प्रबध कर सकते हैं ।

केश समर्पण केलिए उचित दर पर कल्याणकट्टाएँ तथा काटैजो के पास टिकट बेचे जाते हैं । नाइयों को अलग रूप से पैसे देने की आवश्यकता नहीं है ।

कुछ धोखेबाजे व्यक्ति सिर मुण्डन का कम शुल्क लेकर, भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने के वायदे करके यात्रियों को अनधिकारी नाइयो के पास ले जा रहे हैं ।

यात्रियो से निवेदन है कि देवस्थान के कल्याणकट्टाओं को छोडकर अन्य जगह सिर मुण्डन न करवावें । ऐसा करवाने से वे केश भगवान को समर्पित नही समझे जायेंगे और यात्रियों की मनौतियाँ भी पूरी नहीं होंगी । बालाजी के शीघ्र दर्शन की सुविधा के लिए ति ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबध किये गये हैं, कोई भी व्यक्ति भगवान का दर्शन से शीघ्रतर करवाने मे असमर्थ है ।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति. ति देवस्थान, तिरुपति.

तंत्रवाद के आलोक में 'भक्ति' का स्वरूप

(मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के साक्ष्य पर)

(गताक से)

जहाँ तक मध्यकालीन हिन्दी भक्ति-साहित्य का सम्बन्ध है, सामान्यतः उसमें चार धाराएँ मानी जाती है — (क) ज्ञानाश्रयी संतधारा (ख) प्रेमाश्रयी सूफी धारा (ग) कृष्णाश्रयी धारा तथा (घ) रामाश्रयी। चारो ही राग-मार्गी साधक है — राग के दिव्यीकरण में विश्वास करते है। ज्ञानाश्रयी संत कबीर का उद्‌घोष है।

पोथी पढि पढि जग मुआ पण्डित भया न कोइ।
(ढाई) एकै अक्षर प्रेम का पढै सो पण्डित होइ॥

अथवा "भक्ति विमुख जे धरम ताहि अधरम करि मान्यो।" सूफियो के यहाँ तो मजाजी इश्क के माध्यम से हकीकी इश्क की साधना ही होती है। मसूर हल्लाज—बगदाद के प्रसिद्ध सूफी की पुस्तक है – किताबे तवासीफ। यह सूफियो का सिद्धान्त-ग्रथ माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा कि इस सिद्धान्त ग्रन्थ के अनुसार परमात्मा की सत्ता का सार है प्रेम। कृष्णाश्रयी-शाखा के उपास्य कृष्ण घनीभूत रस ही है। उनके आराधक गोपियो को ज्ञानमार्गी उद्धव के वचन भक्ति-विरोधी लगते है

बार बार ये वचन निवारो।
भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो॥

० ० ० ०

सूर उनके भजन आगे लगे फीको ज्ञान।

उत्तरोत्तर कृष्णोपासको में रसोपासना गहरी होती गई और एक समय वह आ गया जब "नायक तहाँ न नायिका रस करबावत खेलि"। इसे परमतत्त्व कहे, रस कहे, प्रेम कहें—पर्याय ही है सब। रामाश्रयी-धारा के गोस्वामी जी भी मानते है -

"मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने।"

यद्यपि गोस्वामी जी मर्यादामार्गी होने के कारण दास्य-स्वभाव के भक्ति कहे जाते है, तथापि अद्वैतवादी प० विजयानन्द त्रिपाठी ने भी 'मानस' में भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप 'प्रेमलक्षणा' भक्ति ही मानी है। सुतीक्ष्ण के विषय में कहा गया है—

अविरल प्रेम भगति मुनि पाई

रामभक्ति की रसिक शाखा का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। इस प्रकार निष्कर्ष यह कि हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य का केन्द्रीय स्वर 'प्रेमा पुमर्थो महान्' का ही है।

(घ) निर्गुण-साहित्य में भक्ति और शक्ति

सम्प्रति, यह देखना है कि इन चारो ही धाराओ में स ध्य-भक्ति 'शक्ति' रूपा किस प्रकार है। निर्गुनियाँ सतो की साधना "सुरति-शब्द योग" के नाम से जानी जाती है। यहाँ 'सुरति' में 'शब्द' के प्रति जो आकर्षण है—वही राग है—प्रेम है। विश्व के समस्त चिन्तनो में 'शब्द' को किसी न किसी प्रकार विश्व या सृष्टि का मूल कहा गया है। इस दृष्टि से 'मूलतत्त्व' शब्दात्मक या 'धुनि' रूप है। सतजनो की इस बिन्दु पर बड़ी आस्था है। वस्तुत. सृष्टि की दृष्टि से वह शब्दात्मक है—अन्यथा शब्दातीत है। इसीलिए तन्त्रो या आगमो में कहा गया है।

'शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति'

जिसे पहले 'स्पद' कहा गया है, जो 'निःस्पद' का सृष्ट्युन्मुख रूप है — वही 'परशब्द' है—सष्टि का सामान्य उपादान है। इसी 'सामान्य स्पद' के 'विशेष स्पद' का ही मूर्तरूप पदार्थ है—ये 'विशेष शब्द' है—ये 'तदेव' है—तन्मात्र हैं—उनमें कोई विकृति नहीं है। पदार्थ तत्त्वतः है क्या—ये एक प्रकार के शक्तिव्यूह है (Constituting Forces) इसके श्रवण का सामर्थ्य निरतिशय श्रवण-सामर्थ्य है। शारदातिलक और अन्यत्र भी इस रहस्य को स्पष्ट किया गया है। वहाँ कहा गया है—

चैतन्य सर्वभूताना शब्दब्रह्मेति में मतिः।
तदैव कुण्डली प्राप्य प्राणिना देहमध्यगम्।
वर्णात्मनाविर्भवति गद्यपद्यादिभेदत॥

अर्थात भूतमात्र में ओतप्रोत चिन्मय तत्त्व शब्दब्रह्म है शब्द है—स्पद है। यही शब्द-तत्त्व अर्थ रूप से परिणत होता हुआ प्राणिमात्र के गुह्यागो के मध्य तक प्रसृत होकर अततः कुण्डलित हो जाता है—कुण्डलिनी के रूप में प्रसुप्त हो जाता है—निर्वतित हो जाता है—जडवत् हो जाता है। पिण्ड में यही कुण्डलिनी प्रसुप्त आत्मशक्ति है—ब्रह्माण्ड में पृथिवीतत्त्व तक परिणत होकर अततः कुण्डलित शेषनाग है। उच्छिष्ट सूक्त द्वारा इसी का स्तवन है। वस्तुत यह चिन्मय शब्दतत्त्व की निजाशक्ति ही क्रीडा के निमित्त उससे पृथक् होकर ससार रूप में परिणत होती है और अतत कुण्डलित होकर कुण्डलिनी कही जाती है। अपने निज घर या रूप से क्रीडार्थ आत्मविस्मरण पूर्वक वही शक्ति 'सुरति' (जीवात्मा) के रूप में नीचे उतरती है—सृष्ट्यात्मना परिणत होती है और इसीलिए ज्ञात या अज्ञात रूप से उसी निज रूप से मिलने के लिए वह बेचैन रहती है निर्गुण साधक इसी सुरति या 'सूरत' का 'शब्द' से योग कराना चाहते है—शक्ति से शक्तिमान् का सामरस्य चाहते है। भूमिकाभेद से वही निजा शक्ति — सुरति-संतो द्वारा विभिन्न वर्णिकाओ में याद की जाती है। इसी 'सुरति' का निज रूप 'शब्द' में जो आकर्षण है—वही 'राग' है—भक्ति है। कबीर ने इन्हे 'दरियाव' और 'लहर' के रूप में उपमित किया है। साथ ही चरम भूमिका पर 'दरियाव'

श्री राममूर्ति त्रिपाठी

'लहर' या इनका पारस्परिक आकर्षण—सभी एकरूप हो जाता है - प्रेम या शक्ति की चरितार्थता भेद के सर्वथा विगलन में ही है। वहाँ साधना, साधक और साध्य—सब एक रूप अर्थात् चिन्मय है। इस प्रकार कबीर के या सतो के यहाँ रागात्मक साधना शक्ति की ही साधना है।

सवाल यह है कि सुरति या जीव का निज रूप के प्रति आकर्षण असिद्धावस्था या साधन-दशा में ज्ञात रूप से रहता है या अज्ञात रूप से? सासारिक विषयो के माध्यम से अज्ञातरूप में होता है या साक्षात ज्ञात रूप से? यदि साक्षात् और ज्ञात रूप से निज रूप के प्रति आकर्षण होता है तो साधक और सिद्ध का अन्तर समाप्त हो जाता है और सासारिक विषयो के माध्यम से अज्ञात रूप मे होता है तो साधक और असाधक का अन्तर समाप्त हो जाता है। अत. कोई मध्यमार्ग ही ढूँढा जा सकता है। मध्यमार्ग है—गुरु के प्रति आकर्षण। सन्तो मे 'गुरु' धुनिरूप माना गया है—वह अव्यक्त का ही व्यक्त प्रतिनिधि है—जो सम्बन्ध अव्यक्त और व्यक्त आग का है वही इनका भी है। इस अव्यक्त और व्यक्त आग की धारा में जो पड जायगा, वह भी आग ही की जाति का हो जायगा। सतो ने कहा है—

"मालिक शब्द है
मालिक प्रेम है
अतएव शब्द भी प्रेम है
सन्त जन देह धारी होते है
वे शब्द की जात (दात) प्रदान
करते हं"

० ० ० ०

शब्द सरूप सद्गुरु अहै जाका आदि न अत

सत पलटूदास ने इन सब बातो को बड़े ही ढग से कह दिया है —

सुरत शब्द के मिलन में मुझको भया अनद।
मुझको भया अनद मिला पानी में पानी।
सुरति सुहागिनि उलटि के मिली सबद में जाय।
मिली सबद में जाय कन्त को वश में कीन्हा।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

आधुनिक धर्म के सन्दर्भ में ज्ञान विज्ञान

भारत एक धर्म प्रधान देश है। जीवन के चार लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति इसी शरीर से होती है। किन्तु, आज के मनीषी एवं नेता सेक्स को लेकर धर्म के नाम पर भारतीय जनता को बरगलाने का प्रयास करते हैं। मानव मन पर राजनीति, इस बीसवीं शताब्दि का एक सबसे बड़ा करिश्मा है। किन्तु, दूसरे दृष्टिकोण से धर्म के नाम पर मानव तथा मानव-समाज को शोषण करने का एक नया तरीका निकाला गया है।

पुरी, कोणार्क तथा खजुराहो के धार्मिक मन्दिरों में मिथुन-रत मूर्तियों के जोड़े विभिन्न सेक्स की मुद्राओं मे भित्ति-चित्रके रूप में अंकित हैं। इसका कारण यही है कि हमारे पूर्वज सेक्स को जीवन से अलग कर नहीं देखते थे। परन्तु, आज सेक्स के नाम पर व्यक्ति के मन का शोषण एवं धर्म-प्राण धार्मिक जनता को बरगलाने का प्रयास किया जा रहा है।

सुखसागर में एक ऐसा जिक्र आता है कि श्री कृष्ण के समान एक बनावटी श्री कृष्ण बनकर शंख, चक्र, गदा एवं पद्म धारण कर, मोर, मुकुट, कटि का छनी पहन कर तथा नकली सुदर्शन-चक्र रख कर उस समय की जनता को बरगला रहा था। अतः श्रीकृष्ण ने उसका अन्त किया।

इच्छा शक्ति (will force) एवं यौगिक करिश्मों के बजाय आज इस बीसवीं शताब्दी में किसी एक व्यक्ति ने न्यूक्लीय विज्ञान के बल पर अपने को योगी श्री कृष्ण एवं महात्मा बनने का ढोंग रचा और उसके करिश्मों से सारा भारत चकित रह गया। धर्म के नाम पर मानवाधिकारों का हनन कर उन्होंने हिटलर के नात्सी यातना शिविरों में दिये-जानेवाले अत्याचारों को भी मात कर दिया।

हिप्नोटिज्म (सम्मोहन प्रक्रिया) एवं न्यूक्लीय (Nuclear) :—

पहले के योगी एवं हिप्नोटिज्म के प्रयोग कर्ता अपनी इच्छाशक्ति के बल पर दूसरे को सम्मोहित करके उसमें अच्छी अच्छी भावना का संचार करते थे। इसमे उनका ध्येय रोगी को अच्छा करना तथा सर्वभूत हितेषुरत की भावना रहती थी।

परन्तु, आज न्यूक्लीय विज्ञान द्वारा किसी को भी सम्मोहन कर उसके मन में गंदी, असमाजिक भावना का रोपन कर उस पर आणुविक-राजनीति किया जा रहा है।

मनुष्य कोई एक भावना-विशेष नहीं है। वह अनेक भावनाओं का समूह है। (Man is a bundle of ideas) किन्तु, उस की एक भावना को लेकर और वह भी सामूहिक-रूप से सम्मोहित कर (Through the medium of mass hyponotism) व्यक्ति के मन मस्तिष्क को जबर्दस्ती बलात्कार कर, उसपर राजनीति का खेल किया जा रहा है। है न यह बीसवी शताब्दी का एक अद्भुत करिश्मा।

साहित्यरत्न श्री अर्जुनशरण प्रसाद, एम.ए.,
चक्रधरपुर.

न्यूक्लीय-यन्त्रों की सहायता से आणुविक- शोक लगा कर, अन्तरिक्ष में एक ही भद्दी आवाज को गुंजा कर, यहाँ तक कि बिजली के पंखे से भी किसी एक भद्दी भावना-विशेष की आवाज कर व्यक्ति को जैम्बो बना दिया जाता है। फिर उसके अनेक विचारों मे से केवल एक विचार को पकड़ कर उस पर आणुविक-राजनीति का खेल किया जाता है।

न्यूक्लीय एवं अंक-अकिन की हाँक :—

ब्लैक-मैजिक याने जादू-टोना के प्रयोग कर्ता किसी को तंग करने और उसे जान मारने के लिए ऐसा प्रयोग करते थे। उसमें प्रेत-प्रेतनी को वश में करके व्यक्ति पर प्रभाव डाला जाता था और उसे परेशान एवं तंग किया जाता था।

आज के आणुविक युग में आणुविक मशीन पर एक लड़की तथा एक लड़के की आवाज से व्यक्ति के कर्ण-कुहरों मे आणुविक तीर मार कर, उसके मस्तिष्क को किसी एक विशेष प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है। जब उसका मस्तिष्क पूर्णरूप से उस आणुविक आवाज म प्रशिक्षित हो जाता है तो बहुत सी आवाजो एवं कोलाहल में भी वह उस आणुविक कम्प्यूटर की आवाज पकड़ लेता है और हमेशा परेशान रहता है। इधर विभिन्न पार्टियाँ उसपर अपनी राजनीति का खेल करती हैं। १९७५ के अक्टूबर में मुझ पर आणुविक डाक-डाकिन का करिसा अपनाया गया। अब इस प्रशिक्षित मस्तिष्क से जो एक प्रकार से आणुविक कम्प्यूटर बन

गया, बहुत प्रकार के आणुविक खेल कर राजनीति का करिश्मा दिखलाया जाता है।

पक्षी तथा जानवरों की आवाजों को समझने की सिद्धि :—

किसी कहानी में पढा था कि एक राजा को यह सिद्धि प्राप्त हो गई थी कि वह पक्षियों की आवाजों भी सुन और समझ लेता था।

अब आसमान से अणु की वर्षा दोचार कुत्तों के एक समूह पर कर दी गई। सभी कुत्ते दो दलों में बँट गये और आपस में दो दलों में विभाजित होकर लडने लगे। आणुविक -प्रशिक्षित मस्तिष्क उन कुत्तों की आवाजों को भी समझने लगा।

किसी पेड पर अणुकण की वर्षा कर दी गई। पेड के पक्षी दो दलों में विभक्त होकर लडने लगे। आणुविक-प्रशिक्षित मस्तिष्क उन पक्षियों की आवाजों को सुन कर उनकी बोली समझने लगा और तंग होने लगा।

और तो और बादलों का गर्जन, हवा की सरसराहटे को भी आणुविक प्रशिक्षित मस्तिष्क अपने तरीके से, जिस आवाज को पकडने के लिए उसे प्रशिक्षित किया गया था, सुन कर परेशान होता रहा। व्यक्ति को तंगकर उसे जान से मारने की कैसी आणुविक साजिश उस युग की है? व्यक्ति के मस्तिष्क को शाक दे देकर आणुविक-कम्प्यूटर बना देना क्या इस युग का एक बडा अपराध नहीं हैं?

प्राण और अपाण वायु का मेल :—

आपके पेट में आणुविक गैस भर दिया गया। अपाण वायु उपर चढ गया। अब मनुष्य प्रयत्न करता रहे, पेट का मल पेट में सूखता रहा। खाने वक्त पेट मे आणुविक गैस भर दिया गया, मुँह का स्वाद बिगड गया। खाने की सारी रुचि समाप्त होगई। खाने वक्त नाक मे आणुविक-गैस किसी अज्ञात-स्थान से मार दिया गया, भोजन के चार कण नासारन्ध्रो से होकर ललाट और मस्तिष्क में चले गये।

ब्लैक-मैजिक अर्थात् जादू टोने का कैसा खेल है इस आणुविक युगका? नाजियों की यातना को मात करनेवाले आणुविक प्रयोग क्या नाजियों की यातनाओ से बढकर नही हैं? क्या बीसवी शताब्दी का मानव धर्म के नाम पर, किसी व्यक्ति के विचारों को परिष्कृत करने के बहाने बर्बरता, असभ्यता, नग्नता तथा पाशविकता का खेल नही खेल रहा?

मास्टर, महात्मा, सन्त, साधु अपने शिष्यों को किसी काम को न करने के लिए एक दोबार हिदायत दे दिया करते थे। अब मानना या न मानना उनके शिष्यों पर निर्भर करता था।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

वैष्णव भक्ति

डॉ एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्य (कर्नाटक).

कावेरी से गोदावरी नदी तक व्याप्त प्रदेश में कन्नड जनता की भाषा है। तमिल, तेलुगु, तुलु, मलयालम्, तुद, कोडगु बडग, कोल गोंडी कुई, कुरख, माल्तो, ब्राहुई आदि द्रविड भाषाएं कन्नड से निकटतम सम्बन्ध रखती हैं। डा० श्रीकण्ठशास्त्री के अनुसार आर्य और द्रविड़ भाषा परिवारों में पृथक्करण करना नासमझ का परिणाम है, क्योकि वे प्राचीनकाल से सस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं से ही सम्बन्धित हैं। कुछ भी हो तमिल साहित्य का स्वर्णयुग, संघयुग कम से कम दो हजार वर्ष प्राचीन है और सघ· पूर्व कालीन कृति तोलकाप्पियम् ई० पू० पाँचवीं शती में रचित लक्षण-ग्रन्थ है और सघकाल की तमिल कृतियों में प्रसिद्ध कविता-सग्रहो पट्टुतकौ पत्तुपाट्टु और पदिनेट्टु कणक्कु आदि में वैष्णव भक्ति का परिचय प्राप्त होता है। उनके बाद संकलित आल्वार के भक्तिगीत, नालायिर प्रबन्धम् वैष्णव भक्ति का ही कोश है।

ई० पू० पांचवीं या छठी शती में एथेन्स के धर्मशास्त्री सीलन चीब के कनफ्यूशियस ला-ओड्स तथा भारत के जैन-बौद्ध धर्म के प्रवर्तक वर्धमान महावीर (ई. पू. ५३९-४६७) और गौतम बुद्ध (ई पू. ५६०-४८०) के आविर्भाव से धार्मिक क्षेत्रो में नये युग निर्मित हुए। जैन और बौद्ध धर्मों के लिये लोक भाषाएँ स्वीकृत हुईं। अशोक चक्रवर्ती से स्थापित शिलालेखो में गौतम बुद्ध के उपदेश पाली आदि प्राकृत भाषाओ में अकित हुए। मौर्य साम्राज्य की अवनति के पश्चात् शुंग, कण्व, शातवाहन, गुप्त वाकाटक आदि से वैष्णव भक्ति का भारत भर में पुनरुत्थान हुआ तो आलवार भक्त वैष्णव भक्ति के गीत तथा सस्कृत भाषातर्गत वैष्णव भक्ति से सम्बन्धित वैदिक तथा औपनिषदिक ज्ञान को तमिल के द्वारा लोकप्रिय बनाने लगे। कन्नड में तमिल गीतों के आधार पर हरिदासो ने विपुल वैष्णव भक्ति-साहित्य का निर्माण किया। मराठी, बगाली, ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी आदि में भी वैष्णव भक्ति का विपुल साहित्य निर्मित हुआ।

ईसा मसीह के जन्म के समय तुर्की, आदि मध्य एशिया के सभी राज्यों में बौद्ध धर्म का प्राबल्य था। बोखारा बौद्धों का तीर्थस्थान था। पैगम्बर मोहम्मद के आविर्भाव तक अरेबिया की जनता अधिकांशतः बौद्ध धर्मावलंबी थी, किन्तु ईसाई और इस्लाम के प्रचार से बौद्ध धर्मावलबी ईसाई या मुसल्मान बन गये। भारत में भी बौद्धो की विशिष्टता मिट गयी। भारत में हर्षसाम्राज्य की अवनति के साथ-साथ बौद्ध धर्म की भी अवनति होती गयी। मरे हुए प्राणियों को खाना और गौतम बुद्ध की मूर्तियो के साथ अन्य देवी-देवताओ की पूजा करना बौद्धो के लिये निषिद्ध नहीं समझा गया। बौद्ध धर्म के अहिंसावाद से च्युत हिंसाकृत्य आदि में व्यस्त, व्याध, मछुए और जुलाहे नीच या चाण्डाल माने गये। उनकी अस्पृश्य और वर्णबाहिर मानने की रूढ़ि दिन-ब-दिन बढती गयी। श्री रामानुजचार्य के समय तक उनकी स्थिति बिगडती गयी। मुसलमान शासकों की धार्मिक नीति और भारतीयो की उस नयी रूढि के फलस्वरूप बहुत से अस्पृश्य मुसल्मान बन गये और वे अन्य भारतीयों के प्रति प्रतिशोध के व्यवहारो में व्यस्त हुए। वैष्णव भक्ति के प्रभाव से ही यह विरुद्ध प्रक्रिया दूर हो सकी।

वैष्णव भक्ति के प्रभाव से नास्तिक जैन धर्म के अनुयायियो में जैन तीर्थंकरो को अवतार पुरुष मानने की रूढि प्रचलित हुई। विष्णु के विभिन्न अवतार तीर्थंकर समझे जाने लगे। भारत भर में ईसा की दसवीं सदी तक जैन धर्म का प्राधान्य रहा। भारत की सभी भाषाओ में दसवीं शती तक का साहित्य जैन धर्मावलम्बियो से अधिक प्रभावित था। जैन धर्मावलम्बी जीवन्मुक्त पुरुषों को ईश्वरकोटि के समान मानते हैं। वे उनके लिये मन्दिर बनाकर पूजा-पाठ करने लगे। जैन साहित्यकार वैदिक पुराणो की शैली को अपनाकर लोक-भाषाओ को अपनी साहित्य-कृतियो का माध्यम बनाने लगे। कालक्रम में शैव और वैष्णव भक्त अपनी देव-भक्ति की अभिव्यक्ति केलिये लोक-भाषाओ को अपनाने लगे। सनातनधर्म से निकले बौद्ध और जैनधर्म अपनी नास्तिकवादी धारणा को तजकर सनातन धर्म के ही अग बन गये। उपर्युक्त विवेचना से विदित होता है कि वैष्णव भक्ति विश्वव्यापी सभी धर्मों की जननी है और सब की विशिष्टताओ को मान्यता देती है। ईसाई और इस्लाम, जैन और बौद्ध धर्म वैष्णव भक्ति के समान व्यापक प्रवृत्ति और सहिष्णुता नहीं रखते। अन्यथा धार्मिक क्षेत्र अधिक लोकोपयोगी होते।

भारत के धार्मिक विकास में जैन और बौद्ध धर्मों में प्रतिपादित अहिंसातत्त्व का विशिष्ट-स्थान है। उनके अहिंसावाद का आधार प्राचीन भारतीय सस्कृति और वैष्णव भक्ति ही है। भगवान कृष्ण से प्रतिपादित भागवत संप्रदाय का स्पष्ट मत था कि यज्ञतत्व का अर्थ पारस्परिक सहकारिता और विश्व के अणु-अणु में व्याप्त भगवान की तृप्ति के लिये कर्तव्यपरायण होकर भगवत् सेवा करना है। उनके अनुसार पत्र, पुष्प, फल और जल से की हुई पूजा से भगवान सुप्रीत होंगे। सात्विकयज्ञ राजस और तामस यज्ञो से श्रेष्ठ है। सात्विक तो शौच, आर्जव, ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा के पालन और श्रद्धापूर्ण होकर निष्काम कर्मों में व्यस्त रहनेवाले होते हैं। भगवत्प्राप्ति केलिये विश्वव्यापी भगवत्कर्म-परायणता भक्ति तथा समस्तभूतो में निर्वैर या मैत्री-भावना अत्यावश्यक है।

भक्तकवि सूरदास

ब्रह्मास्त्र

श्री आर. रामकृष्णा राव,
एम. ए; एलएल. बी,
भिलाई

अहल्या,
सीता,
शकुन्तला,
द्रौपदि को
कीगई अन्याय,
दीगई शाप,
उन
अबलाओं पर
अपराध,
चिड़ियों पर
ब्रह्मास्त्र,
पुरुष जाति पर
अमिट-कलक !

गौतम बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व के बारे में या उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा । बौद्ध धर्म पहले भिक्षुओ और उनके सघो पर आधारित था । इससे वह सन्यासियो का धर्म बना । बौद्ध धर्म में गृहस्थो के लिये आत्मोन्नति का कोई साधन निर्दिष्ट नहीं था । सामान्य तथा आत्मोन्नति के लिये ध्यान और समाधि साधन माने गये थे, किन्तु ये साधन लौकिक व्यवहारो में व्यस्त गृहस्थो के लिये दुस्साध्य थे । जन-साधारण बौद्ध धर्मानुयायी होने पर गौतम बुद्ध की ही पूजा करने लगे और यज्ञ - यागादि में निरामिष सामग्रियो को प्रयुक्त करने वाले ब्राह्मणों को अपने पुरोहित बनाने लगे । कालक्रम में गौतम बुद्ध विष्णु के ही अवतार माने गये । बौद्ध धर्म के प्रचार से यज्ञ - यागादि में पशुबलि की जगह धान्य आदि निरामिष वस्तुओ की आहुति प्रयुक्त होने लगी । कनिष्क के समय से गौतम बुद्ध की मूर्तियो की स्थापना और बौद्ध धर्म को सार्वजनिक बनाने केलिये महायान सम्प्रदाय के सिद्धान्त क्रोड़ीकृत हुए । बुद्ध मूर्ति की पूजा में गीत, दीप, धूप और नैवेद्य उत्सव आदि का प्रयोग होने लगा । महायान सम्प्रदाय विकसित होते होते भारत में वज्रयान, सिद्धपन्थ, गोरखपन्थ आदि के रूप धारण करने लगे ।

मुसलमान आक्रमणकारियो से संघो का नाश होने से बौद्ध धर्म का नामनिशान मिट गया ।

डा० हरदेवबाहरी का अभिप्राय है कि बगला मराठी, हिन्दी, गुजराती आदि के मूल रूपो में अन्तर कम था । कालक्रम में उनके रूप परिवर्तित होते गये । इसी प्रकार दक्षिण भारत में प्रचलित द्रविड भाषाओ के मूलरूप भी एक सा रहा होगा । उत्तर भारत की अधिकाश भाषाओं को आर्य समुदाय में और दक्षिण की भाषाओ को द्रविड भाषा परिवार में प्राय· विभाजित किया जाता है । अशोक चक्रवर्ती के शिलालेखो से मौर्ययुग में प्रचलित प्राकृत भाषाओ का परिचय प्राप्त होता है । विद्वानो की मान्यता है कि विभिन्न भागो में स्थापित शिलालेखो की भाषाएं असमान हैं । उसका कारण प्रादेशिक प्रभाव और उन प्रदेशो का अन्तर हो सकता है।

वैदिक मत्रो में ही कई रूपो के शब्द और वाक्य रचनाओ का परिचय प्राप्त होता है । विद्वानो की मान्यता है कि वैदिक और संस्कृत साहित्यो के विकास में भी प्राकृतो का प्रधान पात्र रहा है । बुद्ध के आविर्भाव - काल से प्राकृत भाषाओ में साहित्य रचना होने लगी और कालक्रम में विभिन्न प्रान्तो की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के रूप अधिकाधिक विभिन्न होते गये । तबसे ईस्वी सन् के प्रारम्भ तक पाली - प्राकृत की प्रधानता थी । सन् ६०० ईस्वी तक मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, शौरसेनी एव महाराष्ट्री प्राकृतो में विपुल साहित्य का सृजन हुआ । सातवींशती से ग्यारहवींशती तक अपभ्रंशो और बाद को आधुनिक आर्यभाषाओ में साहित्य निर्मित होने लगे । हिन्दी का प्राचीनरूप शौरसेनी प्राकृत से अधिक सम्बन्धित है ।

गोदावरी से कावेरी तक कन्नड भाषा की व्याप्ति है । कन्नड भाषा का द्रविड भाषाओ में द्वितीय स्थान है । सबसे प्राचीन कन्नड का शिलालेख हल्मिडी नामक स्थान में प्राप्त हुआ है । यह पांचवीं शती के लगभग निर्मित था । इसकी भाषा तमिल से अधिक सम्बन्धित है । नौवीं शती के कन्नड़ ग्रंथ कविराजमार्ग में उसके रचयिता नृपतुग ने सन् दूसरी शती के कन्नड कवि सिहनन्दी तीसरी शती के व्याख्याकार माधव - पाँचवी शती के गगावशी राजा दुर्विनीत व्याकरण विद्वान पूज्यपाद कविश्रेष्ठ ब्रह्मा स्यमन्तभद्र आदि की कन्नड कृतियो का स्मरण किया है ।

कर्णाटक में अशोक चक्रवर्ती के कई शिलालेख प्राप्त हुए हैं । मोरेरंगडि अर्थात् मौर्यों के बाजार, मोरेर मने, मौर्यों के निवास आदि के अवशेषो से विदित होता है कि कर्णाटक तक मौर्यो का साम्राज्य विस्तृत था । कनकगिरि तथा इसिला नामक नगर कर्णाटक में मौर्यों की राजधानियाँ थीं ।

इ पू तीसरी शती से ईसा की तीसरी शती तक कर्णाटक पर आन्ध्रों की राजसत्ता थी । चाटुकुल के माण्डलिक चौथी शती तक अधिकार में थे । ये राजा बौद्ध धर्म के प्रचार में प्रमुखपात्र लेते थे ।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

(गतांक से)

श्री एकनाथ महाराज की आध्यात्मिक चिंतन धारा

श्री अरविन्द के कथनानुसार आत्मा का यह स्थानान्तर विनाश करण नहीं है वरन् एक विस्तृत आध्यात्मिक सत्ता में समा जाना है अथवा निर्गुण ब्रह्म की परम ज्योति (Super Conseienec) में लय हो जाना है अथवा एक रूप हो जाना है ।

एक आधुनिक साधक का कहना है:

"जब यह आत्मा परमात्मा में लय हो जाता है तो हमारे विचारो और मूल्यो में महान परिवर्तन हो जाता है । सद्‌गुण प्राप्त करने के लिए हमें सचेत रहने और प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं रहती । हमारा जीवन ही सद्‌गुणो से संपन्न सुखमय हो जाता है । हम प्रेम की खातिर सेवा नहीं करते वरन् प्रेम के कारण सेवा करते हैं । आध्यात्मिक मनुष्य नि.स्वार्थी होता है, वह न्याय मूर्ति है । नैतिक मनुष्य कोई दुर्गुण नहीं करता, वह क्रोध नहीं करता आध्यात्मिक मनुष्य कोई दुर्गुण नहीं कर सकता। वह क्रोध करने में असमर्थ है ।" *

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन ... रु. 25—00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा।

I सेवाएं :—

१ अमत्रणोत्सव	रु 200	७ जाफरा बरतन (Vessel)	रु 100
२ पूलगि	60	८ सहस्रकलशाभिषेक	2500
३ पूरा अभिषेक	450	९ अभिषेक कोइल आलवार	1745
४ कर्पूर बरतन (Vessel)	250	१० तिरुप्पाबडा	5000
५ पुनुगु तेल का बरतन (Vessel)	100	११. पवित्रोत्सव	1500
६ कस्तूरि बरतन (Vessel)	100		

सूचना – सेवासंख्या१ — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेंगे। जिस दिन प्रात काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते है।

सेवा क्रमसख्या २–यह सेवा केवल गुरुवार की रात को मनायी जाती है। केवल 2 व्यक्ति ही दर्शन पाप्त कर सकेंगे।

सेवा क्रमसख्या ३–७ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है। इन सेवाओ के लिए प्रवेश इस प्रकार हागा —

क्रमसख्या ३ – गिन्ने के साथ केवल २ व्यक्ति।
४ – गिन्ने के साथ केवल २ व्यक्ति।
५ – ७ – गिन्ने के साथ केवल एक व्यक्ति।

सेवा क्रमसख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है। सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस में बडा, लड्डू, पापड, दोसा इत्यादि होंगे। इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप में दिया जायगा। सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते हैं।

साधारण सूचना.–रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा।

II उत्सव —

१. वसन्तोत्सव	रु. 2500	४. प्लवोत्सव	रु 1500
२. कल्याणोत्सव	1000	५. ऊँजल सेवा	1000
३. ब्रह्मोत्सव	750		

सूचना :— १ **वसन्तोत्सव :—** जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते है उनकी सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनो मे मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा।

२ **ब्रह्मोत्सव** – इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते है अपने साथ ६ साथियो को ला सकते है, तथा तोमालसेवा, अर्चना और रात को एकान्तसेवा में भाग ले सकते है। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो में यात्री की सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा। उत्सव के दिनो में उन को मनानेवाले को पोंगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दिये जायेंगे। उत्सव के अन्त में वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा।

३ **कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव** के अन्त में वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दिये जायेंगे।

III वाहन सेवाएँ :-

१ वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती)	रु	73
२ वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती)	..	63
३ चाँदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हंसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती)		33

सूचना - वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा।

साधारण सूचना :— न. ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा।

IV भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण (१/४ सोला) :–

१ दद्दाभात	रु	40	४ शक्करपोंगलि	रु.	65	७ शक्करभात	रु	85
२ बघार भात	.	50	५ केसरीभात	...	90	८ शीरा		155
३ पोंगलि(घी और मिर्चभात)		55	६. पायसम (खीर)	...	85			

सूचना :—भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे। भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन में स्वीकार करेंगे।

V. पक्वान्नो की भेंट :—

१ लड्डू	रु.	450	४. दोसे	रु	100	७ सुखी	रु	200
२. बडा		250	५ पापड	.	230	८ जिलेबी	...	450
३ पोली	.	225	६ तेनतोल	.	200			

सूचना —जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो की भेंट देते हैं उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दिये जायेंगे। प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वयं आकर मन्दिर से ले जा सकते है। भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घंटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा।

VI. नित्य सेवाएँ :—

१ नित्य कर्पूर हारती रु. 21   २. नित्य नवनीत आरती रु. 42   ३ नित्य अर्चना रु 42

सूचना :—नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष में अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप में देना पडेगा। जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते है उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नही मिलेगा। भक्तो की अनुपस्थिति मे ही उनके नाम पर इन सेवाओ को संपन्न किया जायगा।

—

वेदों में क्या है?

वेदों के सम्बन्ध में देश, जाति एवं काल भेद से भिन्न-भिन्न मान्यतायें प्रचलित हैं। वेदों का आविर्भाव भारत में हुआ। श्रुति परम्परा से उनका सरक्षण एवं अध्ययन एव काल से भारत के अनेक कुलों में चला आ रहा है। जो भारतीय साहित्य उपलब्ध हैं, उन सभी में वेदों को सनातन तथा सर्व-प्राचीन, प्रारम्भिक एवं परम प्रमाण रूप से स्वीकार किया है।

'वेद' समग्र ज्ञान का बोधक है

वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। एक विषय का ज्ञान अगविशेष का शाखारूप ज्ञान है–वह एकांगी एव अपूर्ण है। अग विशेष का ज्ञान अपने-अपने नाम से विख्यात होता है जैसे कि आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थ-वेद आदि नाम प्रचीन काल से हमारे भारत देश में प्रचलित हैं। ये नाम अपने-अपने विषयों को लक्ष्य रखकर प्रयुक्त हुए अथवा व्यवहार में लाये गये हैं। जब समस्त विद्या, ज्ञान आदि का बोध कराना प्रयुक्त करना होगा तो उसके लिए अंग विशेष का नाम त्यागकर समस्त ज्ञान का बोधक शब्द पडता हैं। समग्रता का बोधक शब्द वेद प्रकट करता हैं। वेदों में समस्त ज्ञान, विज्ञान अर्थात् उनमें सब सत्य विद्याएं विद्यमान हैं।

वेदों से ही समस्त विद्याओं का प्रकाश हुआ

प्राचीन काल से वेदों के प्रति उसके अध्ययन कर्ताओं की तथा जन-साधारण की यह धारणा रही हैं कि वेदों में मनुष्यों के लिए समस्त ज्ञान-विज्ञान विद्यमान है। इसी आधार पर प्राचीन समय में जिन भी विद्याओं का विकास हुआ और उन विषयों के जो भी ग्रन्थ रचे गये, उनके रचयिताओं ने स्पष्ट स्वीकार किया कि वेद में इन सब विद्य-विज्ञानों का मूल विद्यमान है। चिकित्सा, वनस्पति, विज्ञान, नृत्य, सगीत, राजनीति, ज्योतिष, भूतत्त्व विज्ञान, वास्तुशास्त्र, भाषा-विज्ञान, विमानशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अध्यात्मा, योगविद्या, प्राणि-विज्ञान आदिके ग्रन्थकर्ताओं ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया कि, हम वेद में मूल रूप से विद्यमान विद्या का ही यहां वर्णन कर रहे हैं। इस प्रकार वेदों की मान्यता केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं थी।

पं० वीरसेन वेदश्रमी

वेदमन्त्रों का मनन करना चाहिए

मनन करने योग्य छन्द (मंत्र)—वेदों की रचना छन्दोमय है। छन्दों में रचित रचना का नाम मन्त्र है। मन्त्रों का समूह वेद है। मन्त्र का तात्पर्य मनन करने की योग्यता में पूर्ण, नियत शब्द राशि से है।

मन्त्राः मननात् — मनन करने योग्य होने से मन्त्र सज्ञा है। बार-बार विचार, चिंतन, ध्यान करना मनन की परिधि में है। जिस पर मनन से ज्ञान प्राप्त हो जावे तो ज्ञात ज्ञान ही वेद की उपलब्धि है। वही दर्शन है। अर्थात् मन्त्र राशि में ज्ञान-विज्ञान गूढ रूप से निहित हैं।

मन्त्र और ऋषि

वेदमन्त्रों में ज्ञान-विज्ञान बीज रूप से विद्यमान होने से ही ये बारम्बार मनन, चिन्तन एवं ध्यान योग्य हैं। इसलिए प्रचीन
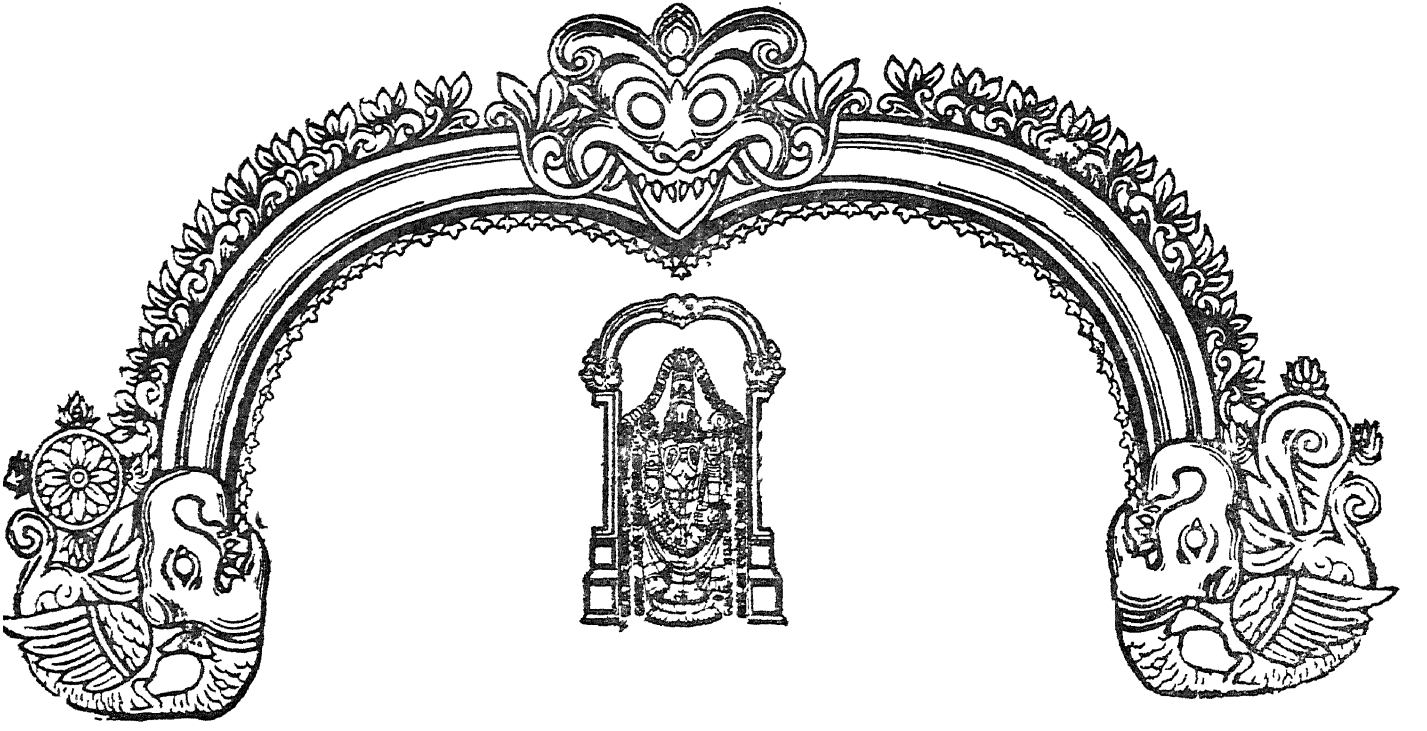
तिरुमल तथा तिरुपति यात्रा की यातायात-सुविधाएँ

भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन से तिरुमल तक रेल के सीधे टिकेट खरीदे जा सकते हैं। तिरुपति तक सीधी रेलगाडियों का प्रबंध भी है। जैसे कि मद्रास से (सप्तगिरि एक्सप्रेस, बडी लाइन), विजयवाडा से (तिरुमल एक्स्प्रेस, बडी लाइन), काकिनाड़ा से (पेसंजर गाडी बडी लाइन), हैदराबाद से (वेंकटाद्रि एक्सप्रेस, छोटी लाइन और रायलसीमा एक्सप्रेस, बडी लाइन), तिरुचिनापलि से (फास्ट प्रेसंजर गाडी, छोटी लाइन) पाकाला, काड्पाडि, रेणिगुण्टा तथा गूडूर जैसे रेल्वे जंक्शनों से तिरुपति तक सुविधाजनक मिली जुली रेलों का प्रबंध है। भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन तक जाने केलिए तिरुमल से ही वापसी यात्रा का टिकेट भी खरीद सकते हैं।

मद्रास तथा हैदराबाद से तिरुपति तक नियमित विमान सेवा का प्रबंध है और हवाई अड्डे से उन यात्रियों को तिरुमल तक ले जाकर फिर वापस लाने केलिए एक विशेष बस का प्रबंध भी है। सुदूर प्रदेशों से रेल या बस से आनेवाले यात्रियों को तिरुमल पहुँचाने केलिए लिंक बसों का भी प्रबंध है। प्रातः काल से लेकर रात देर तक तिरुपति-तिरुमल के बीच हर ३ मिनट पर लगातार चलनेवाली बसों का प्रबंध है। ए. पी. एस. आर. टी. सी. शाखा द्वारा तिरुपति - तिरुमल के बीच कान्ट्राक्ट कारेज बसों का प्रबंध भी है। इस में एक ट्रिप केलिए रु. १२५ देकर ४५ यात्री जा सकते हैं। तिरुपति से तिरुमल तक पैदल दो रास्ते भी हैं जो भव्य सुंदर सात पहाडियों से होते हुए हैं। अनेक यात्रीगण अपनी मनौती के रूप में पैदल रास्ते से आनंद उठाते जाते हैं।

तिरुपति से तिरुमल तक दो घाटी रोड हैं जिन में से एक तिरुमल जाने केलिए द्वितीय तिरुमल से लौटने केलिए हैं।

व्यक्तिगत कारों के लिए भी तिरुमल पर जाने की अनुमति है। यहाँ पर टेक्सियाँ भी मिलती हैं।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

काल में जिन्होंने इन मन्त्रों पर चिन्तन किया वे ऋषि कहलाये ।

ऋषि का अर्थ है— दर्शनात् अर्थात् जिसने मन्त्र पर मनन, चिन्तन, ध्यान करके जब तत्त्व का दर्शन प्राप्त किया तो वे ऋषि कहलाये । इसलिये वेदमन्त्रों के साथ ऋषियों के भी नाम प्रचलित हुए । उन ऋषियों की बुद्धि में वह बीज रूपी ज्ञान विकास को प्राप्त होकर सर्वसाधारण की बुद्धि का विषय बना । बुद्धिगम्य होने पर ही सबको बोध कराने वाला वेद सर्वग्राह्य हुआ ।

वेदों के विषय

वेद चार है— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एव अथर्ववेद ।

ऋग्वेद का प्रधान विषय पदार्थों के ज्ञान से है । यजुर्वेद का प्रधान विषय पदार्थों की प्रयोग विधि से है । प्रयोग विधि की ही कर्मकाण्ड सज्ञा है । इसलिए यजुर्वेद को कर्मकाण्ड प्रधान माना गया ।

सामवेद का विषय पदार्थ ज्ञान एवं कर्मकाण्ड के समत्व स्थापन के निकट पहुचाने से है । परिणाम के निकट पहुंचने की स्थिति की सज्ञा उपासना कहलाती है । उप अर्थात् समीप में आसन अर्थात् स्थिति बैठना । इसलिए सामवेद का प्रधान विषय उपासना माना गया ।

अथर्ववेद का प्रधान विषय, प्रयोजन, उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति से है । थर्व— गतिभाव है । अथर्व —गति अभाव, कम्पन रहित, स्थिरता का द्योतक है ।

चारों वेदों के माध्यम से हम चतुर्विद्या कर्म, ज्ञान, कर्म, साधना एवं प्राप्ति तक पहुँच पाते है। इस प्रकार प्रत्येक विद्या या विज्ञान का न्यूनाधिक रूप से ज्ञान किसी न किसी रूप में वेदों में विद्यमान है ।

उपवेद

वेदों का आश्रय लेकर प्राचीन समय में भारत के ऋषि-मुनियों ने अनेक प्रकार की विद्या एव विज्ञानों का आविष्कार किया । उनमें प्रथम स्थान उपवेदों का है । उपवेद भी चार हैं । उनके नाम हैं : आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद ।

आयुर्वेद : ऋग्वेद का उपवेद

आयुर्वेद वह विद्या या विज्ञान हैं जिसमें रोगों का निदान, रोगों की उत्पत्ति का कारण ज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा के उपयोगी द्रव्य, वृक्ष एवं वनस्पतियों का ज्ञान, उनके विविध प्रकार के गुण-धर्म का ज्ञान, आरोग्यता, स्वास्थ्य, आहार, निद्रा, जीवन बुद्धि, शरीर के पुनर्नवीनाकरण, मृत्यु का ज्ञान, शल्य चिकित्सा, विविध प्रकार की शल्य शास्त्र एव यन्त्रों का निर्माण, वनस्पतियों को विशेष प्रभावशील बनाने का विज्ञान, शरीरशास्त्र, प्रसूतितन्त्र, रसायन, वाजीकरण, कायाकल्प, धातु ज्ञान, उनके शोधन-मारण का ज्ञान आदि अनेक विद्याओं का समावेश है ।

यह आयुर्वेद ऋग्वेद से निकला है अतः ऋग्वेद का उपवेद माना गया । कालान्तर में इसे अथर्ववेद का उपवेद भो माना जाने लगा । संक्षेप में यदि कहा जाये तो प्रधान रूप से आयु, स्वास्थ्य, चिकित्सा से सम्बन्धित विद्या का नाम आयुर्वेद-आयुर्विज्ञान है ।

धनुर्वेद : यजुर्वेद का उपवेद

दूसरा उपवेद धनुर्वेद है । धनुर्वेद के अन्तर्गतयंत्र विद्या है। यन्त्रों की परस्पर संगति करके विविध प्रकार से जीवन के लिए उपयोगी बनाना इसके अन्तर्गत आता है। सृष्टि विज्ञान, विमान निर्माण, उसका संचालन, युद्ध व रक्षा के लिए सैन्य-निर्माण, राजनीति, विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, विविध प्रकार के धूमास्त्र, प्रक्षेपणास्त्र, यातायात साधन, लोक-लोकान्तरों में गमन, प्राणिमात्र का पालन, रक्षण, सवर्धन, वृष्टि करना, वृष्टि रोकना आदि अनेकानेक विद्या-विज्ञानों का धनुर्वेद में समावेश है । यह धनुर्वेद यजुर्वेद का उपवेद है ।

गान्धर्ववेद : सामवेद का उपवेद

गान्धर्ववेद में संगीत, वाद्य, नृत्य, अभिनय, कथा, सवाद, परिवेश, शरीर सज्जा, श्रृंगार, प्रसाधन पदार्थों का निर्माण एव जनका उपयोग, प्राणशक्ति, अन्तर्मुख वृत्ति, नाद ब्रह्म की साधना, शरीर को हल्का, भारी बनाना, वस्त्रालंकारादि निर्माण, पुष्प सज्जा, हस्तकला, चित्रकला, योग-साधनादि अनेक विद्याओं का इसमें समावेश है । गान्धर्ववेद सामवेद का उपवेद है ।

अर्थवेद : अथर्ववेद का उपवेद

अर्थवेद के अन्तर्गत पूर्वोक्त तीनों उपवेदों के विषयों के साथ वाणी की शक्ति उसका विविध रूप उपयोग, ब्रह्म के स्वरूप का ज्ञान, पदार्थों का ज्ञान, चिकित्सा, मृत्यु को हटाने की विद्या, शरीर-रचना के गूढ़ रहस्य और उनके द्वारा ब्रह्म की साधना की विद्या, इतिहास या कथा-शैली का उद्गम मानसिक शक्ति आदि का प्रयोग, ज्योतिष विद्या आदि विविध विद्या-विज्ञानों का इस में अन्तर्भाव होता है । यह अथर्ववेद का उपवेद है ।

उपवेद के ग्रन्थ

उपवेद के नाम किसी एक ग्रन्थ के नही है । अपितु अनेक ग्रन्थ इसके अन्तर्गत है । आयुर्वेद के अनेक ग्रन्थ प्राचीन काल मे थे । उनमें से कुछ ग्रन्थ चरक, सुश्रुत, भेलसंहिता आदि उपलब्ध हैं । बहुत से लुप्त भी हो गये तथा बहुत से अप्रकाशित, एवं अप्राप्य स्थिति में हैं । धनुर्वेद के अन्तर्गत

(शेष पृष्ठ २५ पर)

भारत के माननीय राष्ट्रपति डा० नील संजीवरेड्डी जी का तिरुमल आगमन
सचित्र समाचार
(३-६-७९ व ४-६-७९)

ति ति. देवस्थान के निर्णायक मंडलि के अध्यक्ष डा० रमेशन, आई ए एस भारत के माननीय राष्ट्रपति को स्वागत करते हुए ।

ति ति देवस्थान के उद्यान विभाग के निरीक्षक श्री तम्मन्ना, भारत के राष्ट्रपति को बगीचे के विविध पौधो को दिखाते हुए ।

उनके आगमन के संदर्भ में एक नये पौधे को "क्रोटन नीलम" का नामकरण किया गया ।

राष्ट्रपति को बिर्धा देते हुए निर्णायक मडलि के अध्यक्ष डा० एन रमेशन, आई ए.एस , तथा कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी.आर के. प्रसाद, आई ए.एस. ।
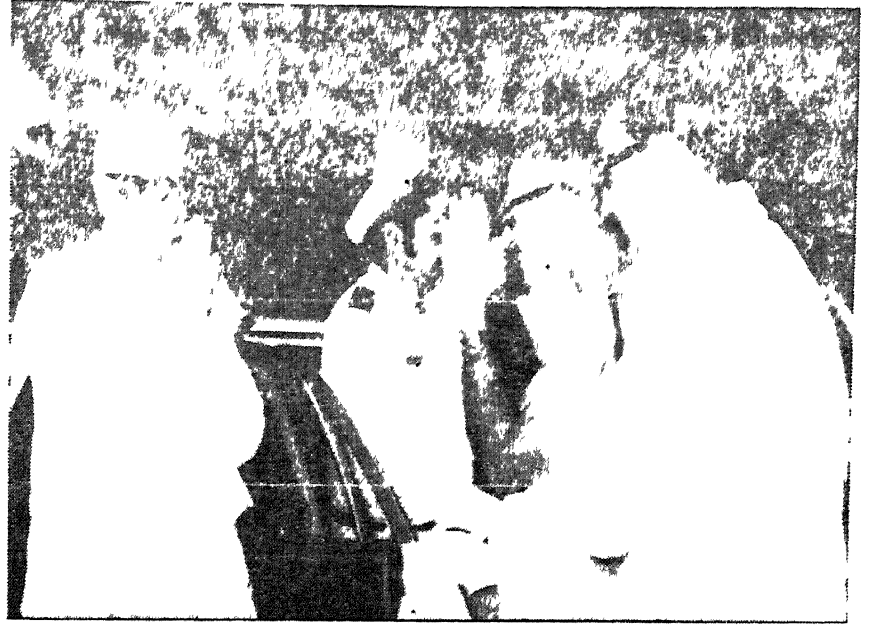
उनके संदर्शन के छाया चित्र के आल्बम को भेंट करते हुए कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर. के प्रसाद, आई. ए. एस.
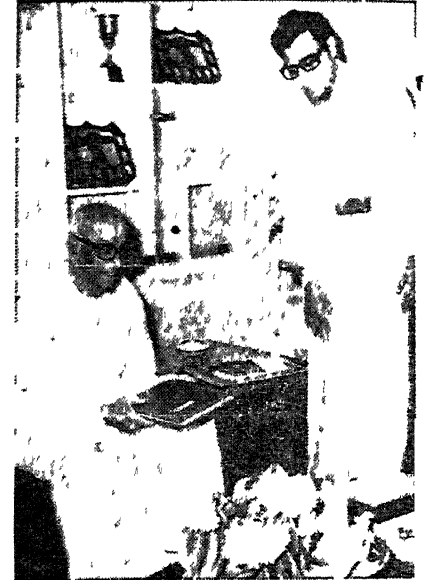
भारत के राष्ट्रपति को अधिकारियो के साथ चित्र में देख सकते हैं ।
बायें से : सर्वश्री डी रामकृष्णय्या, चित्तूर जिला के कलेक्टर, श्री पी वी. आर. के. प्रसाद, कार्यनिर्वहणाधिकारी, डा० नीलम् सजीवरेड्डी, माननीय राष्ट्रपति; डा० एन. रमेशन, देवस्थान के निर्णायक मंडलि के अध्यक्ष; श्री एम. चंद्रमौलि रेड्डी, देवादाय शाखा के कमिशनर, श्री एम. मुनस्वामि नायुडु, उपकार्यनिर्वहणाधिकारी, तिरुमल ।
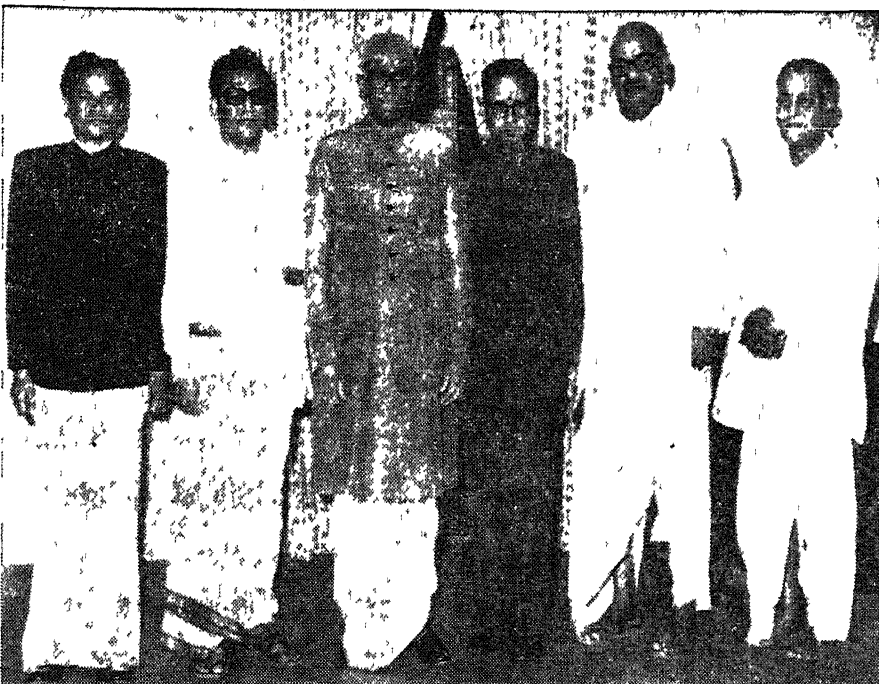
(पृष्ठ १९ पर देखें)
भारद्वाज का बृहद्विमान शास्त्र आदि ग्रन्थ प्रकाशित हो गये हैं जो कि अलभ्य थे। गान्धर्ववेद के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थ संगीत, नृत्य, वाद्यादि के प्राप्य हैं। नारदी शिक्षा इनमें प्रारंभिक अधारभूत ग्रन्थ हैं। अर्थवेद के अन्तर्गत कौटिल्य अर्थशास्त्रादि तथा शुक्र-नीति आदि ग्रन्थ अभी प्राप्य हैं और बहुत से ग्रन्थ अप्राप्य हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थ

वेदों के कर्मकाण्ड द्वारा सृष्टि के तत्त्वों, ऋतुओं, शरीर, मन, प्राण, आत्मा को विविध सस्कारों से युक्त करने का विज्ञान यज्ञ के माध्यम से प्रयुक्त करने का विज्ञान ब्राह्मण ग्रन्थों में विद्यमान है। वेदों के आधार पर ही ब्राह्मण ग्रन्थ विभक्त हैं। ऋग्वेद के ऐतरेयादि, यजुर्वेद के शतपथादि, सामवेद के ताण्डय महाब्राह्मणादि और अथर्ववेद के गोपथादि ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

उपनिषद्

ब्राह्मण ग्रन्थों के जो ब्रह्म विद्या प्रतिपादक भाग हैं उनकी ही उपनिषद् संज्ञा प्रारंभ में हुई। पश्चात् अन्यों की भी उसमें गणना होने लगी हैं। उपनिषद् भी वेद भेद से अपने-अपने वेद से सम्बन्धित हैं। ऋग्वेद से सम्बन्धित ऐतरेयोपनिषद्रादि, यजुर्वेद से सम्बन्धित ईश, कठ, बृहदारण्यकादि, सामवेद से सम्बन्धित केन, छान्दोग्य आदि तथा अथर्ववेद से सम्बन्धित माण्डूक्यादि उपनिषद् हैं।

सूत्र ग्रन्थ

ब्राह्मण ग्रन्थों के कर्मकाण्ड को सूत्र रूप में बद्ध करने का कार्य सूत्र ग्रन्थों द्वारा हुआ। इनमें श्रौत कर्मकाण्ड एव गृह्य कर्मकाण्ड, काम्य प्रयोगों का तथा वेदि निर्माण आदि का वर्णन है। अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रौत यज्ञों की श्रृंखला हैं। जिनमें श्रौत यज्ञों की विधि-विधान है वे श्रौत सूत्र हैं। जिनमें गृह्य कर्म, १६ सस्कार एवं व्यक्तिगत कामनाओं की साधना के कर्मकाण्ड की विधियां है वे गृह्य सूत्र हैं और जिन में वेदिनिर्माणादि का विधान है वे शल्य सूत्र हैं।

काम्य प्रयोग

काम्य प्रयोग वे है जो किसी कामना विशेष से किये जाते हैं। इनमें सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत दोनों प्रकार की कामना होती हैं। उनके प्रयोगों का ज्ञान कल्पग्रन्थों से होता है। ये सब प्रयोग वेदमन्त्रों के आधार पर जप, यज्ञ आदि के रूप मे है। कई कर्म जप से होते है और कई कर्म यज्ञ-होम से सम्पन्न होते है तथा कुछ कर्म दोंनों प्रकार से भी एव दोनों से सम्मिश्रित भी होते हैं।

वेदज्ञान के अनुसन्धान के लिए षड्दर्शन

इन समस्त व्यवहारों का मूल वेद है। वेद ही इनमें व्याप्त है। अतः ये सारे कर्म वेदसे उत्पन्न एवं सिद्ध होते हैं। इसलिए ये समस्त ग्रन्थ वेदों को परम प्रमाण मानते हैं। वेदों में व्यवहार एवं परमार्थ का ज्ञान हैं। उस ज्ञान के अनुसन्धान कार्य में ६ प्रकार के विवेचन मार्ग का प्रदर्शन षड्दर्शनों से होता है। उन षड्दर्शनों के नाम वैशेषिक,न्याय, योग, सांख्य, मीमांसा एव वेदान्त है। एक प्रकार से जो दर्शन, जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है वह अपूर्ण रहता है इसलिए छः प्रकार के दर्शनों के द्वारा वेद-प्रतिपादित ज्ञान का अनुसन्धान करना चाहिए।

वेदों के छः अंग

वेदों के ज्ञान और उस में प्रतिपादित कर्मों को जीवन में धारण करने के लिए वेदों के छः अंग ऋषियों ने निर्धारित किये जो शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एव ज्योतिष के नाम से सुविख्यात हैं।

शिक्षा के ग्रन्थ बहुत है। इन शिक्षा ग्रन्थों द्वारा वेदों के यथावत् उच्चारण करने की विधि ज्ञात होती है।

कल्प ग्रन्थों द्वारा मन्त्रों के विविध प्रयोग बताये गये है।

व्याकरण ग्रन्थों में शब्दों की रचना कैसे हुई, उसका अमुक अर्थ कैसे और क्यों होता है, शुद्ध शब्द क्या है, अशुद्ध प्रयोग क्या है, शब्द-रचना आदि का ज्ञान व्याकरण के बिना कदापि सम्भव नही है। व्याकरण के ग्रन्थों में अष्टाध्यायी, महाभाष्य, धातुपाठ, आख्यानिक, नामिक सौवर, सामासिक, उणादिकोश आदि बहुत ग्रन्थ हैं।

निरुक्त के भी ग्रन्थ अनेक थे। उनमें से यास्क का निरुक्त अति प्रचलित है। वेद के शब्दों का पदार्थो के गुण-कर्मो के साथ सामजस्य किस रूप में सार्थक हो रहा है, यह विज्ञान इस में प्रतिपादित है। यही विज्ञान पदार्थों के तत्त्व विज्ञान का उद्धार करने वाला है।

छन्द विज्ञान दो प्रकार का है। एक वह है जो शब्द को गीत की परिधि में बांधता है। दूसरा वह है जो ब्रह्माण्ड को विविध परिधियों में विभाजित कर, उन विशेष परिधियो मे प्रयोग ज्ञान का प्रदर्शक है। वेदमन्त्रों में जो छन्द है वे गीत एव ब्रह्माण्ड परिधि विभाजन ज्ञान दोनों से सम्बन्धित हैं। इसी छन्दोज्ञान के आधार पर याज्ञिक कर्मकाण्ड का प्रभाव ब्रह्माण्ड के इच्छित स्थान पर हो सकता है। छन्दशास्त्र के अनेक ग्रन्थ हैं जिन में पिंगलाचार्य का छन्दःसूत्र प्रसिद्ध है।

ज्योतिष भी वेद का प्रमुख अंग है। ज्योतिष के माध्यम से सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि

की विविध गतियों का ज्ञान, तिथि, पक्ष, मास, अयन, संवत्सर, ग्रहण आदि का ज्ञान होता है। यह ज्ञान आज भी अच्छी प्रकार से विद्यमान है। वैदिक ज्योतिष और वर्तमान प्रचलित ज्योतिष में बहुत अन्तर हो गया है। वर्तमान ज्योतिष में फलित ज्योतिष की सर्वसाधारण में प्रधानता है जो कि वैदिक युग मे इस रूप में नही थी।

स्मृति ग्रन्थ

स्मृति ग्रन्थ भी वेदों के आचार-व्यवहार के प्रतिपादक हैं। इनमें मनुस्मृति ही सर्वोपरि है एवं प्रमाणिक है। याज्ञवल्क्य स्मृति पराशर स्मृति आदि भी मान्य हैं तथा अन्य भी बहुत सी स्मृतिया उपलब्ध हैं।

इतिहास एवं पुराण ग्रन्थ

भारत के प्राचीन इतिहास में वैदिक कालीन जीवन, व्यवहार, धर्मानुष्ठान, नीति का दर्शन होता है। सृष्टि के इतिहास का अर्थात् प्राकृतिक पदार्थों का इतिहास पुराणों में उपलब्ध होता है। पूर्वकाल में ब्राह्मण ग्रन्थ हीं पुराण थे। परन्तु कालान्तर में पुराण नाम से १८ पुराणों की रचना हुई। उनमें भी कतिपय स्थानों पर वेदों के तत्त्वो का प्रतिपादन इतिहासरूप मे दृष्टिगोचार होता है। रामायण और महाभारत में वैदिक काल के जीवन का वर्णन विद्यमान है।

वेदों की सुरक्षा अत्यावश्यक

इस प्रकार वैदिक साहित्य वहुत विशाल है। उसके अनेक ग्रन्थ उपलब्ध और अनेक अनुपलब्ध भी हैं। हमारे देश के तपस्वी जनों ने वेद की, जो सर्वविद्याओं का मूल है, रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझा। किसी वृक्ष का मूल यदि सुरक्षित रहे तो उस से शाखाओं का उद्गम संभव है। यदिमूल ही नष्ट हो जावे तो शाखा, पत्र, पुष्प, फलादि की प्राप्ति भी सभव नही। इसलिए वेद आज भी सुरक्षित एवं विद्यमान हैं तथा उपलब्ध भी हैं।

(क्रमशः)

मैं और तू

श्री के. एस. शकरनारायण,
कल्पाक्कम

फँसकर माया की जाल में
कुछ भी न कर सकता मैं,
निकालकर इससे, प्रभो! मेरी
रक्षा करना अभी तू।

आलसी बनकर यों ही
समय बिताता मै,
तुलसी न बनाकर मुझे,
सतुष्ट होता तू।

दुष्टो के कपट से दूसरों को
निकालना चाहता मै,
कष्टों को अधिक देकर मुझे
दबाना चाहता तू।

निर्धनता से सब को विमुक्त
करना चाहता मै,
दरिद्रता के क्रूर हाथों से मुझे
कब छुडाता तू?

दान देने की रोज
इच्छा रखता मै,
मान-मर्यादा मुझसे
क्यों भगाता तू?

आशा करता एक दिन
विजय प्राप्त करूँ मैं,
निराशा देकर सभी दिन
पराजय मुझे देता तू।

तेरी सांत्वना केलिए
सदा तडपता मै,
मेरी प्रार्थना सुनने के लिए
क्यों तैयार नहीं तू?

उलझन से बाहर आने की
चेष्टा करता मै,
उलझत को और उलझन बनाकर
नष्ट करता तू।

संत-लोगों के पैर दबाना
चाहता सदा मै?
तुच्छ लोगों की सेवा करना
उचित? बोलना तू।

कब समझ सकूँ तेरा अद्भुत खेल?
यही सोचता मै,
कब समाप्त होगा तेरा विचित्र खेल?
अभी बताना तू!

तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएं

कलियुगवरद भगवान बालाजी संसार के कोने कोने से अगणित भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। हर रोज हजारों भक्त कलियुगवैकुण्ठ तिरुमल का दर्शन कर पुनीत होते हैं। तिरुपति तथा तिरुमल पहुचनेवाले इन असख्य भक्तगणों की सुविधा (यातायात, आवास, बालाजी का दर्शन इत्यादि) केलिए ति ति. देवस्थान उत्तम प्रबन्ध कर रहा है। इन सुविधाओं के अतिरिक्त यात्रियों के भोजन की समस्या की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। देवस्थान की ओर से भोजनशालाओं की व्यवस्था तो है ही है उसके अतिरिक्त तिरुमल पर अन्य भोजनशालाएं भी हैं जिन में भोजन पदार्थों की दरें ति ति. देवस्थान के द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। अतएव यात्रियों से निवेदन है कि वे इन भोजन सुविधाओं का उपयोग करें।

तिरुमल पर भोजन सुविधाए

ति. ति. देवस्थान का अतिथि गृह

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से	९ बजे तक
		दोपहर ३ ,,	शाम ६ ,,
भोजन	,,	प्रातः ११ ,,	दोपहर २ ,,
		रात ७ ,,	रात ९ ,,

यहां पर मिठाई, नमकीन, चाय, काफी इत्यादि पदार्थ उपलब्ध है।

भोजन (full) रु ३–००

जो लोग यहां से भोजन अथवा जलपान प्राप्त करना चाहते है उनको नियमित समय के तीन घंटे के पूर्व ही आर्डर (order) देना चाहिए।

काफी बोर्ड (कल्याणकट्टा के पास)

यहां पर केवल जलपान प्राप्त कर सकते हैं।

समय – प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

काफी बोर्ड (क्यू शेड्स के पास)

यहां पर दहीभात, हल्दीभात तथा शीत पेय प्राप्त होते हैं।

समय प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

टी बोर्ड (ए. टी. काटैज के पास)

यहां पर चाय तथा बिस्कुट प्राप्त होते हैं।

समय : प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

अन्नपूर्णा भोजनालय

यहां पर अनेकविध मिठाई, नमकीन आइस क्रीम, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

(समय) प्रात : ५ बजे से रात १० बजे तक

नभोज समय – प्रातः ९ बजे से शाम ३ बजे तक

तथा

शाम ६ बजे से रात १० बजे तक

भोजन (थाली)	रु. १–७५
अतिरिक्त प्लेट भात	रु ०–६०
भोजन (full)	रु ३–००

वुडलॉड्स (ति.ति.दे. के अतिथिगृह के पास)

यहां पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से रात १० बजे तक
भोजन	,,	प्रातः ११ बजे से दोपहर २–३० बजे तक

मद्रास भोजन	रु. ४–००
उत्तर भारतीय भोजन	रु. ६–००
प्लेट भोजन	रु. १–७५

तिरुपति में देवस्थान का भोजनालय

ति. ति देवस्थान का भोजनालय (पहली धर्मशाला)

समय प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

यहां पर जलपान, आम्प्रो बिस्कुट तथा शीत और गरम पेय प्राप्त होते हैं।

ति. ति. देवस्थान का भोजनालय (दूसरी धर्मशाला)

यहां पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

जलपान (समय)	प्रातः ५ बजे से	प्रातः ९–३० बजे तक
	दोपहर २–३० ,,	शाम ६ बजे तक
भोजन ,,	प्रातः १०–३० ,,	दोपहर २ बजे तक
	६–३० ,,	रात ८ ,,

प्लेट भोजन	रु. १–५०
अतिरिक्त भात (३५० ग्राम)	रु. १–००
दही	रु. ०–४०

(पृष्ठ १४ का शेष)

कदबवशी राजा चौथी शती से छठी शती तक राज करते थे। कदम्बवशी राजा वैदिक धर्म के प्रचारक थे। ई-छठी शती से आठवीं शती तक कर्णाटक में चालुक्यो का प्रभुत्व था। वातापि और नासिक के पास स्थित आनन्दपुर चालुक्यो की राजधानी था। चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओ से बहुत से मन्दिर बने। आठवीं शती से दसवीं शती तक राष्ट्रकूटवशी राजा कर्णाटक के अधिपति थे। मयूरखडी, प्रतिष्ठानगर और मान्यखेट उनकी राजधानियाँ थे।

ईसा की दशवींशती से बारहवीं शती तक कर्णाटक पर कल्याणी के चालुक्य और कलचूर्य और बारहवीं शती से चौदहवीं शती तक यादव और होय्सल राज करते थे। यादवो का प्रभुत्व तुंगभद्रा नदी के उत्तर में था। होय्सल तुगभद्रा नदी के दक्षिण में राज करते थे। मल्लिक काफूर से यादवो तथा होय्सल के राज्य नष्ट-भ्रष्ट हुए। विजयनगर के सम्राट और होयसल वैदिक धर्मावलंबी तथा सभी धर्मो के प्रति समान भाव रखनेवाले थे। दसवीं शती से वैष्णव और शैव भक्ति से सम्बन्धित विपुल साहित्य का कन्नड में सृजन होता गया।

१५६० ई. में विजयनगर साम्राज्य का अन्त हुआ तो कुछ समय तक कर्णाटक में बहुत से छोटे राज्य स्थापित हुए। सन् १३९९ ई. में यदुराय और कृष्णराय नामक दो यादव वशी क्षत्रियो से जो राज्य मैसूर के आसपास स्थापित हुआ था, वह कालक्रम स बढते बढते अठारहवीं शती तक बहुत विस्तृत हुआ था। १७७९ई में. टीपू सुलतान के युद्ध में मारेजाने के पश्चात् २९४७ ई० तक यादववंशी राजाओ को ब्रिटिशो के अधीन्स्थ होकर मैसूर का राजकाज करना पडा।

उपर्युक्त विवरणो से विदित होता है कि कन्नड साहित्य का प्राचीन रूप कम से कम सन् ईसा की दूसरी शती से दृग्गोचर होता है और हिन्दी साहित्य का प्राचीन रूप सातवीं शती से लक्षित होता है। इन दोनो साहित्यो के काल-विभाग विभिन्न दृष्टिकोणों से करने की रूढि प्रचलित है। उदाहरण केलिए श्री आर. एस. पंचमुखी से अपनी कृति "कर्णाटक हरिदास साहित्य" नामक ग्रंथ में वर्णित कन्नड प्रदेश के धार्मिक विभाग निम्न प्रकार है। उसमें धर्म-प्रभावित साहित्य का विभागीकरण है। ईसा की चौथी शती से छठी शती तक जैन तथा शैव धर्म की उन्नति हुई। छठी शती से आठवीं शती तक वैष्णव धर्म की उन्नति हुई। तबसे तीन शतियो तक वैष्णव, शैव और जैन समाज रूप से लोकप्रिय थे। क्रमशः जैनधर्म की जनप्रियता कम हुई तथा शैव, शाक्त, कापालिक तथा वैष्णव धर्म के अनुयायी अधिक हुए। ग्यारहवीं शती में श्री रामानुजाचार्य के प्रभाव से जैनधर्म को धक्का लगा और वैष्णव भक्ति का कर्णाटक में खूब प्रचार हुआ। बारहवीं शती में शैवधर्म का नया रूप वीर शैव धर्म आविर्भूत हुआ। बारहवी और तेरहवीं शतियो में शैव और वैष्णव धर्मानुयायियो का प्रभाव बढता गया। चौदहवीं शती से अठारहवीं शती तक के अन्त तक वैष्णव भक्ति का स्वर्णयुग ही था। इन धार्मिक परिस्थितियो से प्रभावित कन्नड साहित्य का काल विभाग आर नरसिंहाचार्यजी से निम्न प्रकार किया गया है। भाषा, रस, समाज शैली और कवि भी उसके आधार होते है। (अ) कन्नड साहित्य के आरभकाल से बारहवीं शती के मध्य भाग तक जैनयुग (आ) बारहवीं शती के मध्य भाग से पन्द्रहवीं शती तक वीरशैवयुग और (इ पन्द्रहवीं शती से उन्नीसवीं शती तक ब्राह्मण साहित्य युग या वैष्णव युग।

कन्नड भाषा के स्वरूप की दृष्टि से कन्नड साहित्य के पांच विभाग है :

१) ७५० ईस्वी तक मूलकन्नडकाल

२) हलगन्नड अर्थात् पुरानी कन्नड का काल, ७५० - ११५० ई तक

३) मध्य कन्नड काल ११५० से १५०० तक

४) होसकन्नड या नयी कन्नड का काल १५०० से १८५० तक

५) नवगन्नड या अत्याधुनिक कन्नड़ का काल, १८५० से वर्तमान समय तक।

रस की प्राधान्यता की दृष्टि में दसवीं शती से बारहवीं शती तक का समय क्षात्रयुग या वीर - रस - प्रधान - युग है। बारहवीं शती से सोलहवीं शती तक धर्म - प्रचारक युग और सोलहवीं शती से उन्नीसवीं शती तक सार्वजनिक युग और १९ वीं शती के बाद का समय वैज्ञानिक युग कहा जाता है। श्री र श्री मुगली के अनुसार पांचवीं शती से १०वीं शती तक का समय पप - पूर्वयुग १०वीं शती से १२वीं शती के उत्तरार्ध तक पंप युग, तब से १५वीं शती

तिरुमल-तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

कोइल आलवार तिरुमंजनम्

आगम शास्त्रों ने देवस्थलों में पवित्रता की आवश्यकता तथा वैशिष्ट्य का विशेष उल्लेख किया है। मंदिर के अन्दर प्रवेश करने के पहले स्नान करना, पादरक्षाओं को छोडना इत्यादि कुछ नियम इसी पवित्रता को बनाये रखने केलिए ही निर्णीत किये गये हैं। मंदिर के अहाते में ही नहीं बल्कि गर्भगृह में भी आगम शास्त्र के अनुसार एक पवित्र तथा आरोग्यदायक कार्यक्रम संपन्न होता है जो कोइल आलवार तिरुमंजनम् के नाम से अभिहित है।

इस सेवा विधान में सभी मूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ दीपों सहित गर्भगृह से बाहर लायी जाती हैं। और मूलमूर्ति को पानी अंदर नहीं आनेवाले आच्छादन (water proof covering) से अच्छादित किया जाता है। उस के बाद पूरा गर्भ-गृह, दीवार, जमीन तथा ऊपरी भाग अधिक गरम पानी से खूब साफ किया जाता है। तदनंतर सर्वत्र कुंकुम, कर्पूर, चंदन, हल्दी इत्यादि से लेप किया जाता है। फिर मूलमूर्ति से अच्छादन हटाकर मूर्तियाँ, दीप और अन्य चीजों को गर्भ-गृह के अन्दर रखाया जाता है। मूलमूर्ति को पवित्र पूजाएँ समर्पित की जाती हैं और भोग लगाया जाता है।

यह पवित्र कार्यक्रम वर्ष मे केवल चार बार मनाया जाता है- (१) युगादि के पूर्व (तेलुगु नूतन वर्ष), (२) मिथुन कटक संक्रमण के दिन (आणिवारि आस्थानम्) के पूर्व, (३) दिवाली के पूर्व (४) वार्षिक ब्रह्मोत्सव के पूर्व।

इस सेवा को मनाने केलिए सेवा की दर रु. १,७४५/- है। १० लोगों को प्रवेश मिलेगा। कार्यक्रम के अंत मे गृहस्थ को बडा, पापड, दोसै इत्यादि प्रसाद भी प्राप्त होंगे। यह सेवा दैनिक पूजा कार्यक्रम के बाद प्रात ८ बजे संपन्न होती है। उस दिन भगवान का दर्शन दोपहर ३ बजे से चालू होगा।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति

तक बसवयुग और तबसे १९वीं शती तक का समय कुमारव्यासयुग और इसके बाद का समय आधुनिक युग कहलाता है ।

डा० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार उत्तर भारत एवं मध्य देश के हिन्दुओ की वर्तमान साहित्यिक भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द का प्रयोग होता है । मारवाडी, ब्रज, छत्तीसगढी मैथिली आदि को तथा प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओ को भी हिन्दी के ही अन्तर्गत माना जाता है । हिन्दी और उर्दू सगी बहनें है और हिन्दुस्तानी उर्दू का बोलचालकल रूप है । शौरसे प्राकृत से विकसित हिन्दी 'पश्चिमी हिन्दी' और अर्धमागधी प्राकृत से विकसित हिन्दी 'पूर्वी हिन्दी' कहलाती है । मध्यदेश की आठ हिन्दी बोलियो में खडीबोली बागरू ब्रज कन्नौजी तथा बुंदेली पश्चिमी हिन्दी और अवधी बघेली तथा छत्तीसगढी पूर्वी हिन्दी के नाम से प्रसिद्ध है । हिन्दी आदि उत्तर भारत की सभी आर्य भाषाएँ और दक्षिण भारत की मराठी निकटतम सम्बन्ध रखती है । ई पू० १५०० से ५०० ई.पू. तक प्राचीन आर्यभाषाकाल और ई.पू ५०० से १००० ई तक मध्यकालीन आर्य भाषाकाल और उसके बाद अधुनिक आर्यभाषाओ का काल माना जाता है । हिन्दी भाषा के विकास में तीन मुख्य विभाग किये जाते है । ११वीं शती से १५वीं शती तक प्राचीनकाल १५वीं शती से १८वीं शती तक मध्यकाल और तत्पश्चात् हिन्दी का आधुनिक काल है ।

श्री आचार्य रामचन्द्रशुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य के चार विभाग है—वीर गाथा काल भक्तिकाल रीतिकाल और मध्यकाल । मिश्रबन्धु, डा० श्यामसुन्दरदास, आचार्य द्विवेदी, डा० रामकुमार वर्मा आदि ने इस काल विभाग के आरंभ और अन्त के विषय में विभिन्न मत व्यक्त किये है । तो भी, सामान्यतया निम्नाकित आचार्य शुक्ल का काल विभाग अधिकाश साहित्यकारो से मान्य है ।

अ) वीरगाथा काल या आदिकाल सवत् १०५० से १३७५ तक ।

आ) भक्तिकाल या पूर्व मध्यकाल संवत् १३७५ से १७०० तक ।

इ) रीतिकाल संवत् १७०० से १९०० तक ।

ई) गद्यकाल या आधुनिक काल संतत् १९०० के बाद ।

हर्ष साम्राज्य के अस्त होने के पश्चात् उत्तर भारत में असंख्य छोटे छोटे राज्यो की स्थापना हुई । उनके पारस्परिक सघर्ष के परिणाम अनिवार्य बनें । आठवीं शती के आरभ में सिन्ध अरबो के अधिकार जनता जजिया आदि आर्थिक और राजनैतिक दबावो के प्रभावो से मुसलमान धर्मावलबी हो गयी । राजपूत राजाओं के प्राबल्य के कारण दसवीं शती के अन्त तक केवल सिन्ध ही मुसलमान शासको के अधिकार में आ सका । आलोच्यकाल में उत्तर भारत के पश्चिम में गुर्जर प्रतिहार और पूर्वभाग में पाल राजा प्रबल थे । दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट, पल्लव तथा चालुक्यो का सर्वाधिकार था । गुर्जर प्रतिहार रामचन्द्रजी के भाई लक्ष्मण के वशज माने जाते है । कन्नौज के राजा यशोवर्मन् (सन् ७००–७४०) के दरबारी कवि भवभूति के भारतीय नाटक - साहित्य को उत्कृष्ट कृति उत्तररामचरित की रचना की । गुर्जर प्रतिहार राजा नागभट प्रथम ने आक्रामक अरब सेनाओ को हराकर आगामी सदियों में उनको सिन्ध से आगे नहीं बढने दिया । पालराजाओ

वसंतोत्सव के अवसर पर सीता सहित राम और लक्ष्मण, कोदंडरामस्वामी मंदिर, तिरुपति.

के आश्रय में बौद्ध तथा वैष्णओ को सस्कृत साहित्य तथा धार्मिक सस्थाओं को उन्नत करने में बडी सहायता मिली। चालुक्य राजाओ ने वातापी और पट्टदकल्लु के बहुत से मन्दिरों और अजन्ता के गुहान्तर्देवालयो की स्थापना की। चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय से लाट अर्थात् दक्षिण गुजरात पर सिन्धदेश के अरबो के आक्रमण (सन ७३३–७४५) रोके गये। इससे दक्षिण भारत पर संभाव्य अनिष्ट का निवारण हुआ। राष्ट्रकूट 'राजाओ के नाम ध्रुव, कृष्ण, ग्रोविन्द तथा पल्लवो के राजा सिंहविष्णु और नरसिंहन् आदि वैष्णव भक्ति की लोकप्रियता के परिचायक हैं।

दसवीं शती के पश्चात् गुर्जर प्रतिहारों की अवनति हुई और बहुत से राजपूतों के स्वतत्र राज्य स्थापित हुए। अजमेर और सम्भार के चौहान, बुन्देलखण्ड के चन्द्रात्रेय मध्यप्रदेश के हैह्यवशी कलचूर्म कन्नौज और वाराणसी के गहद्वार मालवा के परमार गुजरात के सोलकी सेवार के गुहिलोत और बगाल के सेन राजा गुर्जरप्रतिहारों और पालराजाओं के उत्तराधिकारी हुए। कलयाणी के चालुक्य, देवगिरी के यादव, द्वारसमुद्र के होयसल वारगल के काकतीय और दक्षिण भारत के चोल तेरहवीं शती के आदिभाग तक भारत के शेषभागो के राजा थे।

कर्णाटक में ग्यारहवीं शती में रामानुजाचाय के आगमन के पश्चात् वैष्णव भक्ति का प्रभाव दिनो दिन बढ़ने लगा। मेलुकोटे, तलकाडु वेलूर सोमनाथपुर आदि के वैष्णव मन्दिरो में निर्मित मनोहारी कलाकृतियों के साथ भगवन्मूर्तियो के पूजा पाठ, उत्सव आदि से वैष्णव भक्ति की लोकप्रियता तथा प्राचीन भारतीय भक्ति-पन्थो के प्रति साहित्यकारो का ध्यान अवश्य आकर्षित हुआ। तेरहवीं शती में मध्वाचार्य के आविर्भाव से उडुपी में कृष्ण मन्दिर का निर्माण हुआ। उसके नित्यार्चन और वैष्णव भक्ति के प्रचार केलिए स्थापित आठ मठो के स्वामियो से वैष्णव भक्ति से सम्बन्धित साहित्य की श्रीवृद्धि होती गयी। अब तक केवल जैनो से धार्मिक साहित्य केलिये लोकभाषा कन्नड प्रयुक्त होते देखकर वैष्णव भक्त भी अपने साहित्य के लिये कन्नड को अपनाने लगे। सबसे पहले वैष्णव भक्ति का प्रतिपादक काव्य "जगन्नाथविजय" वीरबल्लाल के दरबारी कवि रुद्रभट्ट नामक ब्राह्मण से रचा गया। यह विष्णु पुराण पर आधारित ग्रथ है। नरहरितीर्थ से रचित भक्तिपूर्ण कीर्तन और चौंडरस से लिखित 'नलचरित्रे' से तात्कालीन वैष्णव साहित्यकारो के परिवर्तित मनोभावो का परिचय प्राप्त होता है। कुंमारव्यास से १४०० ई. में. भामिनीषट्पदी में महाभारत के पहले दस पर्व कन्नड में रचे गये। पन्द्रहवीं शती के मध्यभाग में आविर्भूत माध्वसन्यासी श्रीपादराजस्वामी कर्णाटक की हरिदास परपरा के साहित्य निर्माण के मार्ग दर्शक हुए।

श्रीपादराजस्वामी तमिलनाडु के श्रीरगम्, काचीपुर आदि वैष्णव क्षेत्रो के मन्दिरो में पूजा और उत्सवो के समय वैदिक मन्त्रो के साथ साथ आलवारो के भक्तिगीतो का प्रयोग होते देखकर कन्नड में रचित भक्तिगीतों को कर्णाटक के मन्दिरो में पूजा के समय गाने की प्रेरणा देने लगे। श्रीपादराजने भगवन्महिमा के वर्णन में बहुत से पदो की रचना करके दूसरों को भी वैसे कीर्तन रचने की प्रेरणा दी। फुटकल पदो के अतिरिक्त आपने गोपीगीत, वेणुगीत, भ्रमरगीत श्रीलक्ष्मीनृसिंह पादुर्भाव दडक, रुक्मिणी सत्यभामा विलास और मध्वनाम नामक काव्यो का प्रणयन किया। श्रीपादराज के ही शिष्य व्यासराज स्वामी हैं। वे विजयनगर के छः सम्राटो के राजगुरु थे। वैष्णव भक्तो के संघो व्यासकूट और दासकूटो का निर्माण और उनका मार्गदर्शन व्यासराजस्वामी की अनुपम देन मानी जा सकती है। श्रीव्यासराजस्वामी विजयनगर के तत्कालीन विद्यापीठ के आचार्य थे। उनके विद्यापीठ में हजारो विद्यार्थियो और विद्वानो को आश्रय प्राप्त था। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य ने संभवत: श्रीव्यासराज से स्थापित भक्तो की मण्डली तथा लोकभाषा कन्नड में हरिदासो से रचित कीर्तनो से प्रभावित होकर सूरदास आदि से ब्रजभाषा में भगवान कृष्ण के गुणगान तथा लीलाप्रदर्शक कृतियो को निर्माण कराने की प्रेरणा पायी। जब वल्लभाचार्य विजयनगर में पुष्टिमार्ग के प्रचारार्थ आये थे।

तब वे वाक्यार्थ करके श्रीव्यासराजस्वामी तथा विजयनगर के सम्राट से पुरस्कृत हुए थे। हिन्दी कृष्ण भक्ति धारा के प्रमुख साहित्यकार और भक्त कवियो की मण्डली की स्थापना में उपर्युक्त घटना का मुख्यपात्र था। बगाल के जनसाधारण में वैष्णव भक्ति को लोकप्रिय बनानेवालो में चैतन्य महाप्रभु सर्वप्रसिद्ध हैं। चैतन्य महाप्रभु के गुरु केशवभारती और ईश्वरपुरी ही नहीं, किन्तु तेरहवीं शताब्दी में बंगाल में रचित रत्नावली के प्रणेता विष्णुपुरी, १५वीं शती में चैतन्य महाप्रभु पर अत्यधिक प्रभाव डालनेवाले महेन्द्रपुरी आदि माध्व संप्रदाय के थे।

ऊपर दिये गये विवरणो से किस प्रकार रामानन्द सप्रदाय वल्लभ सप्रदाय और चैतन्य सप्रदाय पर दक्षिण भारत में प्रवर्तित वैष्णव भक्ति का प्रभाव पडा यह स्पष्ट हो जाता है।

हरिदासो की कृतियो के अतिरिक्त लक्ष्मीश कवि से १५५० ई. में निर्मित जैमिनी भारत १६५० ई में नागरस से भामिनी षट्पदी में रचित कन्नड भगवद्गीते, मैसूर के राजा चिक्क देवराज (१६७२–१७०४) से लिखित चिक्क

(क्रमशः)

(पृष्ठ ११ का शेष)

चलै न सिवकै जोर जाय जब सक्ती लीन्हा।
फिर सक्ती भी ना रहै सक्ती मे सीव कहाई।
अपने मन का फेर और दूजा ना कोई।
सकती सिव है एक नाम कहने को दोई।
पलटू सकती सीव का भेद गया अलगाय।
सुरति सुहागिनि उलटि कै मिली सबद में
जाय।

जिस आकर्षण से दोनो का योग होता है—वह आकर्षण भी अन्तत. वही है। ऊपर कहा ही गया है अत· 'शब्द भी प्रेम ही है—अभिप्राय यह कि आगमिक धारा के अनुरूप ही संतो की भक्ति ठीक-ठीक समझी जा सकती है।

(ङ) सूफी-साहित्य और साधना

प० गोपीनाथ कविराज का विचार है कि सूफी-सम्प्रदाय और आचार-विशेष के साथ प्रत्यभिज्ञा, त्रिपुरा और गौडी वैष्णवमत का सादृश्य परिदृष्ट होता है। उन्होने बताया है कि सूफी मत के दर्शनो में स्थूलत· तीन सिद्धान्तो का परिचय मिलता है। मै यहाँ उनमें से केवल एक को उद्धृत कर रहा हूँ।

'परमार्थतत्त्व एक और नित्य सौन्दर्यस्वरूप है। चिरसुन्दर का यह स्वभाव है कि वह अपने भाव में विभोर होकर विश्वदर्पण में अपने मुख को—आत्मस्वरूप को निरन्तर ही देखता रहता है, अतएव जगत् प्रतिबिम्बमात्र है, परिणाम नहीं। सौन्दर्य का आत्मप्रकाश ही सृष्टि का कारण है। उन्होने अपने स्वातत्र्य बल से एक विराट् अभाव—एक महाशून्य का आविर्भाव किया। इस अभावमय दर्पण मे भावमय का प्रतिबिम्ब पड़ा। यह अभाव प्रतिबिम्बित–भाव ही विश्व है। इसी कारण विश्व उभयात्मक और परिवर्तनशील है। इस अभावाश को दूर कर पूर्ण होना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। पर इसको दूर करने के लिए 'अहम्' भाव का दमन करना पड़ेगा। यही सब अनर्थों का मूल है। इस अभिमानवृत्ति का एक मात्र साधन है—प्रेम। एक बार इसके उदित हो जाने पर चित्त अद्वैत प्रेमस्वरूप में विश्राम पा जाता है। यह प्रेम अनन्त और मुक्त है। यहाँ शक्ति और शक्तिमान अभिन्न है। सूफी चिन्तक नफी प्रणीत 'मकसदो अकसा' में यह सब स्पष्ट है। उनके गजल, रुबाइयात तथा मसनबी आदि मे जो वर्णन मिलता है—उससे उस मूलतत्त्व के पुरुष या स्त्री होने का एकान्त निर्णय नहीं हो पाता—वस्तुत वह दोनो का अभेदात्मक सामरस्य है।

सूफी सत मानते हैं कि खुदी को पाने के लिए इश्क या प्रेम का ही एक मार्ग है—इस साधना राज्य में अकल की दखल नहीं है—उसे पाने का रास्ता 'हृदय' मे होकर ही गया है—'कल्ब' ही इसका माध्यम है। उनकी दृष्टि में यह अभौतिक है, दिव्य है, भौतिक और जड़ नहीं। 'जिक्र' और 'मुराकवत्' के माध्यम से 'इश्क' की आग तेज की जाती है और इस आग से 'नफस' का वह व्यवधायक परदा भस्म हो जाता है जो 'जीव' और 'चरमतत्त्व' के बीच है। 'कल्ब' पर पडा हुआ 'मल' जब भस्म हो जाता है—तो कल्ब निर्मल दर्बण की तरह हो जाता है, जिसके सहारे आत्मस्वरूप का प्रत्यक्ष हो जाता है। इस प्रकार यह 'कल्ब' या 'हृदय' आगमो की भाषा में 'शक्ति' या 'विमर्श' ही है। यह माध्यम यदि आत्म रूप से भिन्न हो, तो आत्मा की स्वयप्रकाश्यता जाती रहेगी और यदि अभिन्न हो, तो आत्मा की ही निजाशक्ति मानी जायगी और यही मानना चाहिए। इस प्रकार हृदय या कल्ब वह निर्मल रागात्मिका शक्ति है जो आत्मोपलब्धि का माध्यम है।

(च) कृष्णाश्रयी धारा की भक्ति और शक्ति

मध्यकालीन वैष्णव-मतो का उपजीव्य भागवत और पाञ्चरात्र आगम है। पाञ्चरात्र मे महाविष्णु और लक्ष्मी में वैसा ही तादात्म्य बताया गया है जैसा शक्ति और शिव का। दार्शनिक मूल ढाँचा वही है, संज्ञा भेद भर है। दोनो में चन्द्र-चन्द्रिका की भाँति तादात्म्य बताया गया है। इस धारा में शक्ति को भक्ति रूप प्रमाणित करने के लिए बहुत तर्क देने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ तो 'भाव' ही 'महाभाव' रूप में परिणत होता है और कृष्ण की अतरगा ह्लादिनीशक्तिस्वरूप राधा ही महाभावस्वरूपा मानी जाती है—अत· यहाँ स्पष्ट ही निजाशक्ति भक्ति के रूप में स्वीकृत है।

(छ) रामधारा मे भक्ति और शक्ति

रामधारा के मर्यादामार्गी कविवर्य तुलसीदास का स्पष्ट मत है कि आत्मोपलब्धि के निमित्त दो मार्ग हैं—ज्ञान या ब्रह्मविद्यामार्ग तथा भक्ति-मार्ग। पहला आयास-साध्य है और सिद्ध होने पर भी उस ज्ञानदीप को वासना बयार बुझा सकती है, पर भक्ति निरायास होती है और यह वह मणि है जो बडी-से-बडी झझा में भी अविचल रहती है। आचार्यों ने इन दोनों का अन्तर चार दृष्टियों से समझाया है—स्वरूप, साधन, फल तथा अधिकार।

भक्ति स्वतत्र मार्ग है, वह ब्रह्मविद्या निरपेक्ष अविद्या का नाश कर देती है—

"ससृनि मूल अविद्या नामा॥"

अविद्या की निवृत्ति तो विद्या से ही होगी, पर इस के लिए ब्रह्मविद्यावालो की तरह प्रयास नहीं करना पडता। यहाँ तो स्वरसत. भक्ति की जाती है—अविद्या-विनाश के लिए प्रयत्न नहीं किया जाता—वह तो अनुषगत· निवृत्त हो जाती है। गोस्वामी जी ने कहा है—

भोजन करिय तृप्ति हित लागी।
जिमि सो असन पचव जठरागी॥

गोस्वामी जी भी मानते हैं कि लीला पुरुषोत्तम चरमतत्त्व की इच्छा शक्ति का ही यह सब खेल है। यह इच्छा शक्ति मायातीत है, महामाया है, आदि शक्ति है—सीता है, यही जग उपजाती है, इसी के सहारे भगवान् शरीरी होते है—जो शरीर आगमोक्त प्रभाववश चिदानन्दमय माना जाता है। भागवत में भी उसे 'आनन्दमात्रकर पादशिरोरुहादि' माना गया है। 'विनय-पत्रिका' में अतत· यही इच्छाशक्ति अथवा निजाशक्ति रूपा सीता ही परब्रह्म पुरुषोत्तम के साक्षात्कार का माध्यम बताई गई है। गीताकार जब कहते हैं—भक्त्या मामभिजानाति—तो निश्चय ही वे चरमतत्त्व और भक्ति को अभिन्न कहते हैं—अन्यथा यदि भक्ति भिन्न रूपा होकर परमात्म प्रकाशक हो जाय, तो उसकी स्वयम् प्रकाशता व्याहत हो जायगी। मानसकार की अविरल प्रेम भगति जो सर्वोच्च और साध्य है—वह निजाशक्तिरूप ही है।

इस प्रकार आगमो के आलोक में मध्यकालीन भक्तिसाहित्य का मथन किया जाय, तो निष्कर्ष यही निकलता है कि साध्य-भक्ति आत्मशक्ति का ही नामान्तर है।

(क्रमश.)

प्रस्तुत कविता, कवि की निराशा अवस्था का द्योतक है। निराशा की अवस्था में जब सगी साथी उससे मुँह मोड लेते हैं, चारों ओर से कवि पर न्युक्लीय अस्त्र चलाकर उसे तरह तरह से तबाह किया जा रहा है, आणुविक बाण मार कर उसकी मन बुद्धि मलीन की जा रही है नाक, कान प्रतिदिन छोटे किये जा रहे हैं, भगवान पर उसकी आस्था उठती हुई-सी प्रतीत होती है। किन्तु, अन्त में वह भगवान की महिमा ही प्रतिपादित करता है।

साहित्यरत्न श्री अर्जुन शरण प्रसाद, चक्रधरपुर

ईश्वर की महिमा के नाम

तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
सुना था द्रौपदी की लाज, कभी तुमने बचायी थी,
पढाया, अजामिल, गीध गणिका को कभी तुमने ही
तारी थी।
सभी ये कपोल-कल्पित बातें, कहानी बन कर कही जाती
इधर इस आणुविक युग में कहानी बन कर ही रह
जाती।
इस आणुविक युग में, व्यक्ति को अणु से हनन किया
जाता,
मनु की सन्तान ही नर पर, अमानुषिक प्रयोग किया
करता।
मस्तिष्क पर आणुविक विस्फोट, वातावरण को कलुष
किया करता,
अपने ही पेट की खातिर, राजनीति का खेल किया
करता।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
सुना था जीसस् क्राइस्ट ने किसी मुरदे को जिलाया था,
सुना था महात्मा गाँधी ने कुष्ट रोगी का घाव तक
धोया।
सुना था बुद्ध ने किसी एक लगडे मेमने को गोद
उठाया था।
वे सब अब हैं किताबी बातें, कहानी बन कर कही जाती।
मगर इनसान इस युग का दूसरे इनसानों को सताता है।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
आणुविक प्रयोग करके मनुष्य का मन लुप्त कर किया
जाता,
अमानुषिक प्रयोग करके नर का संहार किया जाता।
सभी प्रयोग पेट की खातिर, तुम्हारे नाम की ओट में,
आडम्बर देखलो नर का, तुम्हारे नाम की खातिर।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
सोते, जागते, खाते नर पर अणुविक तीर चलाया
जाता।

जल, थल, अचर, नभचर से बनावटी अनहद नाद
गुजाया जाता।
करिश्मा ये अणुविक युग के है, मनुष्य की महिमा
ऊँची है,
तुम्हारे ही बनाये नर, बल, बुद्धि का खेल दिखाता है।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
सोचने की सहज प्रक्रिया पर, आणुविक प्रयोग किया
जाता,
श्वासन, योगनिद्रा में, आणुविक धक्के मार कर जगाया
जाता।
तुम्हारे नाम लेने वक्त मन पर न्युक्लीय अस्त्र चलाया
जाता
क्या मंदिर, क्या गिरजे, क्या मस्जिद सबों में,
आज आणुविक बनावटी नाम गुजाया जाता।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
मन को कमजोर करने में, सफेदपोशों ने अनेक ढोंग
रचाये है,
व्यक्ति को जैम्बो बनोन में न्यूक्लीय अस्त्र चलाये है।
सभ्य मानव के है ये प्रतीक, उपमा खोजे कहीं इनकी
नहीं मिलती
नरको निष्क्रिय बनाने मे, इन्होने अनेक प्रयोग लगाए हैं।
तुम्हारा नाम झूठा है, तुम्हारी महिमा झूठी है।
अगर तुम्हारी अदृश्य शक्तियाँ इन आततइयो की
शक्ति खतम नही करती,
अगर तुम्हारी महिमा से दिन दूनी रात चौगुनी पनपती
फूलती फलती
व्यक्ति का विश्वास तुम पर से उठ जायेगा सदाकेलिए,
न कोई जायेगा गिरजा, नकोई जायेगा मस्जिद,
न कोई जायेगा मंदिर, न कोई जायेगा गुरुद्वारे।
तुम्हारा नाम साँचा है, अगर आतताई भी सताये जाते
तुम्हारी अदृश्य-शक्तियाँ इनपर, अगर अपना खेल
दिखा जाती।

(पृष्ठ १२ का शेष)

हिटलर तथा बडे बडे तानाशाही शासक अपने तलवार के बल पर अपनी आवाज दूसरों से मनवाते थे। नहीं मानने पर उनके मुंह में मूत्र एवं विष्ठा खिला दी जाती थी तथा उन्हें तलवार के घाट उतार दिया जाता था।

आज के इस आणुविक-युग का तानाशाह न्यूक्लीय-विज्ञान के बदौलत अपनी आदर्शों को दूसरों से मनवाता है। नहीं मानने पर आणुविक-प्रक्रिया द्वारा उसके दाँत के मसूडे गला दिये जाते है, दाँत सभी हिलने लगेंगे। नॉक में प्रतिदिन आणुविक शाक लगा कर नाक को चिपटा कर दिया जायेगा, मस्तिष्क में आणुविक-शाक मार कर उसे निष्क्रिय कर देने का प्रयास किया जायेगा। जब मस्तिष्क की प्रक्रिया बन्द हो गई तो सोचने समझने की शक्ति अपने आप जाती रही। आप इसी जीवन मे सदा के लिए विकल्पक समाधि में लीन हो जायेंगें।

ब्लैक मैजिक अर्थात् जादू टोने का कैसा प्रयोग इस न्यूक्लीय विज्ञान द्वारा किया जा रहा है। यह अब सोचने की बात है कि ये सब धर्म एव विचार परिमार्जन के तरीके है या न्यूक्लीय-अस्त्रों को परिचालित कर व्यक्ति स्वय प्रशिक्षण पा रहा है, साम्राज्य-वादी नीति का अभ्यास कर रहा है और समाज में तहलका तथा आतक फैला रहा है?

आधुनिक युग के मास्टर को अपने शिष्यों को विभिन्न चक्र-भेदन की क्षमता :—

शास्त्रों में षडचक्र के सम्बन्ध में बताया गया है जो शरीर के स्परिक डबुल में स्थित हैं। विभिन्न चक्र भेदने से विभिन्न सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं ऐसा बताया जाता है। आधुनिक श्रीकृष्ण ने मस्तिष्क याने 'सहस्त्रार-चक्र' एव ललाट में दोनों भौहों के मध्य 'आज्ञा-चक्र' में आणुविस्फोट कर अपना विश्वरूप का परिचय तो दे ही दिया, जिसे उसके पूर्व के लेख में दर्शाया गया है अब नीचे के चक्रों का हाल सुनिए।

गणेशचक्र :— न्यूक्लीय द्वारा आणुविक गैस पेट तथा किडनी मे भर दिया गया। बूंद बूंद कर पेशाब होने लगा, पाखाना बन्द हो गया। अब गणेश-चक्र में तरह तरह का अनुभव होने लगा।

हृदय-चक्र :— आणुविक-गैस पेट में भर गये। पेट में गड गड की आवाज सुनने लगे। अपानवायु तो बन्द है ही। आणुविक प्रशिक्षित मस्तिष्क पेट की गड गड की आवाज से भी अर्थ निकालने लगा। लीजिए, आधुनिक युग के न्यूक्लीय विज्ञान के आविष्कर्त्ता ने आपको तीन चार चक्रों को भेदन करने की क्रिया सिखला दी। धर्म के नाम पर मनुष्य न यातना देनेके कैसे कैसे तरीके उस युग में अपनाये हैं।

त्राटक योग :— आप सोये हैं। अभी अभी मीटी नीद ले ही रहे हैं, प्रथम झपकी ही लगी है कि आपको एक जोर दार आणुविक एव न्यूक्लीय धक्के मार कर उठा दिया गया। अब डर से नींद आयेगी भी तो कैसे। रात भर छत को ताकते रहिए, दिवाल पर छिप किली को अपना शिकार मच्छड तथा अन्यान्य कीडो को पकड़ने का खेल देखते रहिए और त्राटक-योग का अच्छा खा। व्यायाम करते रहें। न्यूक्लीय युग मे योग के कितने अदूभुत करिश्मे हैं।

अजपाजाप :— इस पद्धति में साधक को पवित्र नाम का स्मरण अपने आप होता रहता है। भगवान का स्मरण करने केलिए कोई प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं पडती।

अब सोते या जागते, खाते या पीते बाकी हर वक्त आपको आणुविक न्यूक्लीय शाक का डर बना रहेगा। हर घडी एक प्रकार के सर्पदंश की आशका से आप पीडित रहेंगे। प्रत्येक फल आणुविक शॉक लगने की आशंका में आप गुजारेंगे।

मानसिक तनाव की यह स्थिति कितनी भयावह एव भयानक हो सकती है उसे आप अनुमान लगा सकते हैं। अतः पवित्रनाम 'न्यूक्लीय' एवं 'आणुविक शाक की याद आपको सदा बनी रहेगी। उपर से बनावटी 'अनहद नाद' पवित्र नाम की याद दिलाती ही रहती है। अतः अजपाजाप स्वय होता रहता है।

न्यूक्लीय एव वाममार्ग :—

वाममार्ग में पञ्च मकारों का वर्णन है अर्थात् उसके सभी अक्षर 'म' से शुरू होते हैं। अतः इसका नाम 'पच मकार' हुआ। ये हैं मत्स्य, मॉस, मदिरा, मैथुन इत्यादि। इस में सबसे अन्तिम 'मैथुन' को ही लें। उस समय के साधक अपनी साधना के लिए किसी ऐसी स्त्री का साथ खोजते थे जो उनकी साधना में साथ दे? वे पहले अपने लिंग से तेल, घी इत्यादि पदार्थों को उपर खींचने का अभ्यास करते थे। इसके बाद अपनी स्त्री-साधिका के साथ सभोग-रत होकर अपने प्राण को ब्रह्माण्ड में चढाकर ब्रह्मलीन हो जाया करते थे। आज के न्यूक्लीय विज्ञान ने इसे बहुत ही आसान बना दिया है। मान लीजिए पति-पत्नी एकान्त क्षण का उपभोग कर रहें हैं। दोनों मिथुन रत हैं। अब न्यूक्लीय-बाण मार दिया गया। मनुष्य पडा रहे उसी अवस्था में और वाम मार्ग के अन्तिम 'मैथुन' का आनन्द ब्रह्माण्ड में प्राण चढाकर लेता रहे। न्यूक्लीय का यह कितना बडा चमत्कार

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
नारायणवनम्, [ति. ति. देवस्थान]

दैनिक-कार्यक्रम

१	सुप्रभात	प्रात. ६–३० से	प्रात ७–०० तक
२.	मंदिर के दर्वाजे खोलना	,, ७–००	
३	विश्वरूप सवदर्शन	,, ७–०० से	,, ८–३० ,,
४.	तोमालसेवा	,, ८–३० ,,	,, ९–०० ,,
५	कोलुवु & अर्चना	,, ९–०० ,,	,, ९–३० ,,
६.	पहली घटी. सात्तुमोरै	,, ९–३० ,,	,, १०–०० ,,
७.	सर्वदर्शन	१०–०० ,,	,, ११–३० ,,
८	दूसरी घटी अष्टोत्तरम (एकात)	,, ११–३० ,	मध्याह्न १२–०० ,,
९	तीर्मानम	मध्याह्न १२–००	
१०	मंदिर के दर्वाजे खोलना	शाम ४–००	
११	सर्वदर्शन	,, ४–०० से	शाम ६–०० ,,
१२	तोमाल सेवा & अर्चना	शाम ६–०० ,,	,, ६–३० ,,
१३	रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै	,, ६–३० ,,	रात ७–०० ,,
१४.	सर्वदर्शन	रात ७–०० ,,	,, ८–४५ ,,

अर्जित सेवाओं की दरें

१	अचना & अष्टोत्तरम	रु १–००
२	हारति	रु. ०–२५
३	नारियल फोडना	रु. ०–१०
४	सहस्र नामार्चना	रु ५–००
५	पूलंगि (गुरुवार)	रु १–००
६.	अभिषेकानतर दर्शन (शुक्रवार)	रु. १–००
७.	वाहनम् (वाहन वाहको के किराये बिना)	रु १५–००
८.	सिंगमोरै, तेल खर्च	रु २–५०

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति, देवस्थान, तिरुपति.

है? अब यह आप पर निर्भर है कि आप सोचेंकि न्यूक्लीय विज्ञान वरदान हैं या अभिशाप। मानव को हनन करने का प्रयास है या उसे जीवन प्रदान करने का श्रोत। क्योंकि यह बात कल आपके साथ भी घट सकती है। हो सकता है, बहुतों के साथ घटी हो और किसी ने इसपर ध्यान नहीं दिया हों तथा अनदेखे अनजाने काल के गाल में जाकर असमय ही काल कवलित हो गए हों।

पंचअग्नि सेवन :—

पहले जमाने में यह एक तपस्या का अग था। जेठ की दुपहरी में जब चारो ओर सूर्य की किरणें आग उगल रही हों साधक अपने चारों ओर अग्नि जला कर तपस्या करता था।

आज इस आणुविक युग में न्यूक्लीय विधान इसका लोगों को प्रत्यक्ष आभास दिला रहा है। गर्मी का समय, क्वार्टर में एस्बेसटस की छत उस पर से आणुविक विकिरणें। पंचअग्नि सेवन कर तपस्या का आनन्द आजाता है। सारे शरीर से पसीने की बुंदें चू रही हैं।

प्रकृति पर कमान (Command on nature)

विज्ञान ने प्रकृति को अपने वश में कर तो लिया है किन्तु, मानवता की भलाई के बदले वह बुराई करन मे ज्यादा लगा है। एक ओर जब गर्मी आग उगल रही थी, तुरंत ही ठंठी ठंढा हवा बहने लगी। आसमान से बर्फ के टुकडे गिरने लगे। ये सब न्यूक्लीय प्रयोग है जिन्हे अपना कर मनुष्य आणुविक विज्ञान म पारंगत बन रहा है। सृष्टि के अविदित रहस्यो को खोलना, इसका प्रयत्न तो दार्शनिक भी अपने तरीकेसे समझने और सुलझाने का करते हैं। किन्तु, दूसरों को सता कर, पीडित कर एवं जान मरकर नहीं। यहीं दार्शनिक की व्याख्या और विधान के प्रयोग में अन्तर है। *

(पृष्ठ ३४ का शेष)

अच्युताय
नीलाद्रिनिलयाय
क्षीराब्धिनाथाय
वैकुण्ठाचलवासिन
मुकुन्दाय
अनन्ताय
विरिंचाभ्यर्थिवानीक सौम्यरूपाय
सुवर्णमुखरीस्नातमनुजाभीष्टदायिने
हलायुध जगत्तीर्थसमस्तफलदायिने
ॐ गोविन्दाय नमः
श्रीनिवासाय नमः
श्रीवेंकटेश्वराष्टोत्तर शतनामावलिः समाप्ता

श्रीलक्ष्म्याष्टोत्तर शतनामावलिः

ॐ प्रकृत्यै नम.
विकृत्यै
विद्यायै
सर्वभूतहितप्रदायै
श्रद्धायै
विभूत्यै
सरभ्यै
परमात्मिकायै
वाचे
पद्मालयायै
पद्मायै
शुचये
स्वाहायै
स्वधायै
सुधायै
धन्यायै
हिरण्मयै
लक्ष्म्यै
नित्यपुष्पायै
विभावर्यै
आदित्यै
दित्यै
दीप्तायै
वसुधायै
वसुधारिण्यै
कमलायै
कान्तै
क्षमायै
क्षीरोदसम्भवायै
अनुग्रहपरायै
ॐ धनधान्यकर्यै नमः
ॐ बुद्धये नमः
अनघायै
हारवल्लभायै
अशोकायै
अमृतायै
दीप्रायै
लोकशोकविनाशिन्यै
धर्मनिलयायै
करुणायै
लोकमात्रे
पद्मप्रियायै
पद्महस्तायै
पद्माक्ष्यै
पद्मसुन्दर्यै
पद्मोद्भवायै
पद्ममुख्यै
पद्मनाभप्रियायै
रमायै
पद्ममालाधरायै
देव्यै
पद्मिन्यै
पद्मगन्धिन्यै
पुण्यगन्धायै
सुप्रसन्नायै
प्रसादाभिमुख्यै
प्रभायै
चन्द्रवदनायै
चन्द्रायै
चन्द्रसहोदर्यै
चतुर्भुजायै
चन्द्ररूपायै
इन्दिरायै
इन्दुशीतलायै
आह्लादजनन्यै
पुष्ट्यै
शिवायै
शिवकर्यै
सत्यै
विमलायै
विश्वजनन्यै
तुष्टये
दारिद्र्यनाशिन्यै
प्रीतिपुष्करिण्यै
शान्तायै
शुक्लमाल्यांबरायै
श्रियै
भास्कर्यै
बिल्वनिलयायै
वरारोहायै
यशस्विन्यै
वसुन्धरायै
उदारांगायै
हरिण्यै
हेममालिन्यै
सिद्धये
स्त्रैणसौम्यायै
शुभप्रदायै
नृपवेश्मगतानन्दायै
वरलक्ष्मैय
वसुप्रदायै
शुभायै
हिरण्यप्राकारायै
समुद्रतनयायै
जयायै
मंगलायै
देव्यै
विष्णुवक्षस्थलस्थितायै
विष्णुपत्न्यै
प्रसन्नाक्ष्यै
नारायणसमाश्रतायै
दारिद्र्यध्वंसिन्यै
देव्यै
सर्वोपद्रववारिण्यै
नवदुर्गायै
महाकाल्यै
ब्रह्मविष्णुशिवात्मकायै
त्रिकालज्ञानसंपन्नायै
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तर शतनामावलिः समाप्ता ।

श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ श्रीरामाय नमः
रामभद्राय
रामचन्द्राय
शाश्वताय
राजीवलोचनाय
श्रीमते
राजेन्द्राय
रघुपुंगवाय
जानकीवल्लभाय
जैत्राय
जितामित्राय
जनार्दनाय
विश्वामित्रप्रियाय
दान्ताय
शरणत्राणतत्पराय
वालिप्रमथनाय
वाग्मिने
सत्यवाचे
सत्यविक्रमाय
सत्यव्रताय
व्रतधराय
सदाहनुमदाश्रिताय
कौसलेयाय
खरध्वंसिने
विराधवधपण्डिताय
विभीषणपरित्राणे
हरकोदण्ड खण्डनाय
सप्तताल प्रभेत्ते:
दशग्रीवशिरोहराय
जामदग्न्यमहादर्पदलनाय
ताटकान्तकाय
वेदान्तसाराय
वेदात्मने
भवरोगस्य भेषजाय
दूषणत्रिशिरोहन्त्रे
त्रिमूर्तये
त्रिगुणात्मकाय
त्रिविक्रमाय
त्रिलोकात्मने
पुण्यचारित्रकीर्तनाय
त्रिलोकरक्षकाय
धन्विने
दण्डकारण्यकर्तनाय
अहल्याशापशमनाय
पितृभक्ताय
वरप्रदाय
जितेन्द्रियाय
जितक्रोधाय
जितामित्राय
जगद्गुरवे
ऋक्षवानर संघा तने
चित्रकूटसमाश्रयाय
जयन्तत्र।ण वरदाय
सुमित्रपुत्रसेविताय
सर्वदेवाधिदेवाय
मृतवानर जीवनाय
मायामारीचहन्त्रे
महादेवाय
महाभुजाय
सर्वदेवस्तुताय
सौम्याय
ब्रह्मण्याय
मुनिसस्तुताय
महायोगिने
महोदाराय
सुग्रीवेप्सितराज्यदाय
सर्वपुण्याधिकफलाय

(शेष पृष्ठ ३६ पर)
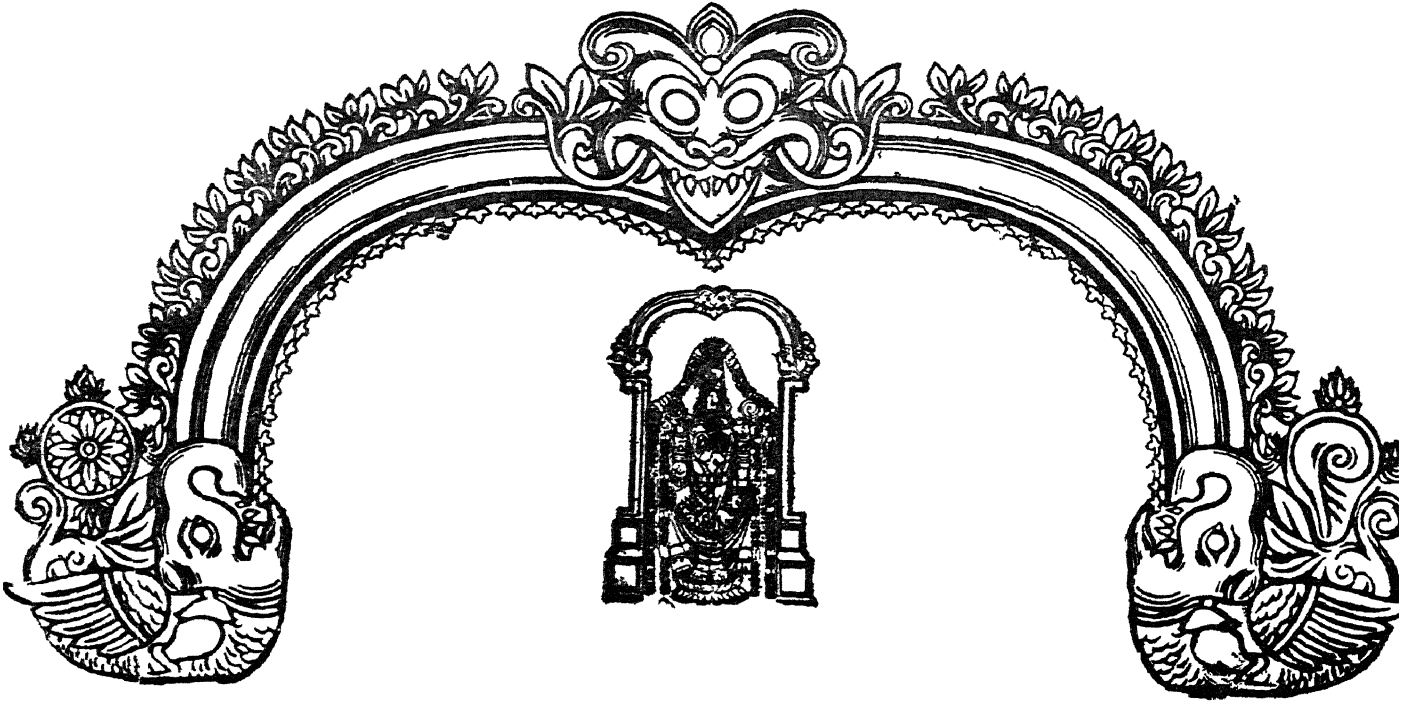
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक संभव हो एक संयत एवं क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घंटे का समय मंदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घंटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबंध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नहीं सकते वे प्रति व्यक्ति रु. २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति. देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कभी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अतः कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलंब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित ही है और वह एक प्रकार की तपः साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का संपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

मानवता के परम सेवक

श्री जगमोहन चतुर्वेदी, हैदराबाद.

आदर्श सन्त :

भागवत के आदर्शसन्त को भागवतोत्तम की संज्ञा दी जाती है। अर्थात् भक्तो में श्रेष्ठ। ऐसा भगवतपुरुष, भगवत परायण, भगवद्मद-मस्त तथा भगवद्रूप ही होता है। वह अहकार शून्य होता है अत सब कार्य भगवत प्रेरणा से करता है। उसके विचार, उसकी भावनाएं तथा कर्म ईश्वर द्वारा संचालित होते हैं। श्री शंकराचार्य के शब्दो में उसके सब कार्य भगवान की आराधना ही है।

यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं
शंभो तवाराधनम् ।।

यद्यपि इन सन्तो ने यह अनुभव प्राप्त कर लिया है कि वे ईश्वर से एक-रूप होगए हैं तथापि उन्हे इसका पूर्ण ज्ञान है कि उनमें और ईश्वर में अन्तर है। ज्ञानेश्वर के कथनानुसार पूर्ण अनुभव प्राप्त करने के बाद भी भक्त और भगवान में यह सूक्ष्म अन्तर इस शरीर के जीवन काल तक बना ही रहता है। अतः वह इस अनुभव से सदा सचेत रहता है कि उसमें ओर भगवान में शरीर-पात तक यह अन्तर बना ही रहता है।

श्री शंकराचार्य ने इस भाव को इस प्रकार वर्णन किया है :

मेरे स्वामी! यदि मुझ में और आप में जो अन्तर था वह मिट चुका है तथापि मे आपका हूँ परन्तु आप मेरे नहीं। साधारणतः कहा जाता है कि तरगे समुद्र की है पर यह कोई नहीं कहता कि समुद्र तरंगो का है।"

यद्यपिभेदापगमे नाथतवाहं न मामकीनरस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरंगः क्वचन न समुद्रो हि तारंगः।।

इसी अन्तर के कारण भक्त, परम-भक्ति का आनन्द भोगता रहता है। भागवत का आदर्श सन्त ऐसा पुरुष होता है जिसने ईश्वर का पूर्ण साक्षात्कार कर लिया है, उसे सर्वत्र भगवान के दर्शन होते है तथा प्रतिक्षण वह दैवी आनन्द का भोग करता है। उसका जीवन ईश्वर की एकता का आनन्दमय जीवन है। उसका अहंकार नष्ट हो जाता है। उसके मनो-विकार सदा केलिए उसे त्याग देते है और उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों में रस नहीं लेती अतः वह निस्पृह होता है और उसमें किसी बात की अभिलाषा नहीं होती। उसे किसी का डर नहीं होता, उसे मृत्यु का भी भय नही होता।

यह भक्त सर्वत्र भगवान के दर्शन करता है। भगवान श्रीहरि उसके हृदय को क्षण भर केलिए भी नहीं छोडते है क्योकि उसने प्रेमकी रस्सी से उनके चरण-कमलों को बाँध रखा है। वह लेशमात्र किसी से न घृणा करता है और न द्वेष। वह उनके दुःखो में सदा दया का व्यव हार करता है। उसे दया की मूर्ति ही समझना चाहिए।

ऐसे भक्त को जिसमें अहकार लेशमात्र को नहीं होता और जो केवल ईश्वरीय ध्यान में मग्न रहता है अपने तन की कोई चिन्ता नहीं होती। उसका शरीर ईश्वराधीन और ईश्वर सचालित होता है अत वह देश में उपस्थित होता हुआ भी, देह बन्धन से मुक्त होता है। उसकी अन्तिम साँस तक भगवान उसका पालन पोषण-रक्षण करता है। वह भगवान में निवास करता है ओर उन्हीं में विहार करता है। अत उसके मुख से जो शब्द निकलते है उन्हे ईश्व-रीय शब्द समझना चाहिए और वह जो कर्म करता है उसे ईश्वरीय कर्म समझना चाहिए।

प्रारब्धानुसार जब तक वह जीवित रहता है भगवान से उसकी ऐक्यता सपूर्णता को नहीं पहुँचती। भगवान और भक्त में थोडा-सा अन्तर मना ही रहता है। तन-मन के बन्धन में जकडा हुआ जब तक वह जीवित रहता है तब तक वह पूर्ण दैवी गुणो और उपलब्धियो से कुछ-कुछ वचित रहता है। अतः प्रभु से साक्षात्कार हो जाने पर भी भक्त, भक्त ही बना रहता है क्योकि उसे अपने शारीरक कर्मों को प्रारब्धानुसार करना ही पडता है। भगवान के प्रति प्रेम, आदर और कृतज्ञता के भाव उसके हृदय में सदा उमडते रहते हैं क्योकि साक्षात्कार के समय उसने जिस परमानन्द का सुख भोगा है वह भुलाया नहीं जाता। इस प्रेममयी परम भाव, कृतज्ञता आदर और आनन्द को ही श्री एकनाथ अभेद भक्ति अथवा परा-भक्ति कहते है। जो हरि चरणो में अनन्य भक्ति रखते है उन्हें भक्तो में प्रधान तथा वैष्णवों में अग्रगण्य समझना चाहिए।

श्रीएकनाथ महाराज के अनुसार यह है
आदर्श भक्त।
अथवा भक्तोत्तम के स्वभाव का तात्विक
सार ।।

एक आधुनिक विद्वान ने आदर्श सन्त का जो स्वभाव चित्रण किया है वह एकनाथ द्वारा चित्रित आदर्श सन्त के जीवन पर भरपूर प्रकाश डालता है।

सकल जीवन के आदर्श को हम उस समय ही समझ सकते है जब हमें सन्त के दर्शन और सत्संग का लाभ हो। जब हम किसी सन्त को देखते है तो हमें ईसामसीह के शब्दो का स्मरण हो आता है।

खेतो में लहराते हुए कुमुदनी के फूलों को देखो। वे न श्रम करते है और न अपना श्रृंगार तब भी इतकी सुन्दरता पवित्रता की ममता को सुसज्जित सोलोमन भी प्राप्त नहीं कर सकता।

ईसा मसीह न कुमुदुनी को पवित्र और सकल जीवन का श्रेष्ठ प्रतीक क्यो माना ?

कुमुदनी के फूल को अपने विकसित होने के बाद जो सुषमा व सौन्दर्य प्राप्त होता है उसका उसे भान तक नहीं होता। उसके जीवन का ध्येय अपने अल्प परमित जीवन में निहित भग-वत् सौन्दर्य का प्रदर्शन करना है। यह अपनी सुगंध से सबको समान रूप से सुवासित करता है। यह किसी से न कृतज्ञता की भाँग करता है और न ही प्रशसा की कामना अथवा सराहना। जन-साधारण तो उस कुमुदनी की इस अनुपम और दुष्प्राप्य सुषमा पर ध्यान तक नहीं देता परन्तु कुमुदनी के पुष्प को इस बात का संतोष होता है कि उसका प्रशान्त जीवन दूसरों के जीवन को सुखमय बनाने केलिए ही है। इस कार्य के लिए न किसी प्रयत्न की आवश्यकता होती है और न श्रमकी तथापि यह कार्य अवि-राम चलता ही रहता है। यह अपने जीवन के प्रतिक्षण परमानन्द का अमित व अक्षय सुख करता रहता है। इसीलिए इस पुष्प को पवित्र पूर्ण काम सौन्दर्य और आनन्द की रचना का उपयुक्त प्रतीक माना जाता है।

इसी भाव का वर्णन तुलसीदास ने इस प्रकार किया है :

वंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं
कोइ।
अंजलिगत सुमसुमनजिमिसम सुगंध कर दोइ।।

भागवत में आदर्श भक्त का वर्णन इन सारगर्भित शब्दों में किया गया है :

"आदर्श भक्त भगवान और आत्मा के दर्शन सर्वत्र सब प्राणियों में करता है तथा आनन्दमय आत्मा और परमात्मा में सब प्राणियो के दर्शन करता है।"

सर्व भूतेषुयः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः ।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥

मानवता पर सन्त की अनुकम्पा ·

सन्त से समाज अथवा मानवता को लाभ है—इस पर बहुधा संदेह व्यक्त किया जाता है। ढोंगी सन्तों के निरीक्षण से इस संदेह की उत्पत्ति होती है।

वात्सव में सन्त का मानव के लिए महान महत्व है क्योंकि वह मानव के ध्यान को क्षण प्रतिक्षण भगवान की महानता और सर्वत्र व्यापकता की ओर आकर्षित करता है। मनुष्य दूसरे मनुष्य से तब ही प्रेम करता है जब उसे इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उनमें एक ही आत्मा समान रूप से विद्यमान है। मानव प्रेम का आधार भगवत प्रेम है। भगवत प्रेम ही हमें मानव प्रेम की तरफ उत्प्रेरित करता है।

प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना ।
प्रेम ते प्रकट होयँ भगवाना ॥

उद्धव आदर्श भक्त थे। भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हे जो अन्तिम आदेश दिया था और जिस तत्परता से उद्धव ने उसे पालन किया इस बात का ज्वलन्त उदाहरण व प्रमाण है कि सन्त मानवता की महान् सेवा करते हैं तथा मानवता पर परमानन्द की वर्षा करते हैं।

श्रीकृष्ण ने परम प्रेमी भक्त उद्धव को ज्ञानामृत का उपदेश कर जो आदेश दिया उसका वर्णन श्री एकनाथ ने इस प्रकार किया है

"मेरे प्रिय उद्धव! अब तुम मेरी आज्ञा से बदरिकाश्रम में चले जाओ और वहीं निवास करो। तुम्हारी उपस्थिति से वहाँ सामाजिक कल्याण होगा। बहुत से हृदय हीन मनुष्यो का "उद्धार होगा। तुम्हारा उदाहरण मानवता के लिए एक आदर्श होगा। अतः तुम अनन्दभक्ति और आत्मज्ञान का दूसरो को उपदेश कर अपने निर्धारित कर्तव्यो का पालन सदा करते रहो। क्या मानव के पथ-प्रदर्शन के लिए मैं कर्तव्य पालन नहीं करता? यद्यपि मुझे इन कर्तव्यो से कुछ प्राप्त करना नहीं है। तुम्हे भी इसी का अनुसरण करना है। यही मेरा पूर्ण आदेश है जिसका पालन करना तुम्हारे लिए मेरा ही काम है—ऐसा समझो। तुमने साक्षात्कार प्राप्त किया है अत मानव तुम्हारे द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अवलबन करेंगे तदर्थ तुम्हे अपनी निष्कामता भक्ति, सहिष्णुता निष्पक्षता वर्चस्वता और शान्तता का प्रदर्शन तथा उपयोग पर हितार्थ करना है। दूसरों को ज्ञान-दर्शन कराना जो पूर्ण आत्म ज्ञान का चिन्ह है सफल कार्य नहीं है। मनुष्य को अपना उद्धार करना है और दूसरो का भी। यही आत्म ज्ञान का प्रयोजन है और इसी में आत्म ज्ञान की महिमा है। जिस प्रकार पक्षी सुपक्व फलो से लदे हुए वृक्ष की तरफ उडकर पहुँचते है, उसी प्रकार साधक शिष्य आदर्श सन्त के पास परमानन्द प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से पहुँचते हैं। हे उद्धव! तुम्हे मैंने परम ज्योति से आलोकित किया है और आशीर्वाद दिया है अत इस परम ज्योति के प्रकाश से मानव के हृदय में ज्ञान-दीप प्रज्वलित कर उसका उद्धार करो।

[ए भा XXIX 804–810, 816–818, 824–8 6]

आसाकारी शिष्य ने तदनुसार भगवतकार्य सपादन के लिए आनंद मंगल के साथ विशाल क्षेत्र बदरिकाश्रम के लिए अपने स्वामी के रूप को अपने हृदय में स्थापित कर प्रस्थान किया। पूर्ण आनन्द के साथ वे जहाँ जहाँ गए उन सब स्थानो और उनके निवासियों को अपनी भक्ति, निस्पृहता और आत्म-ज्ञान से पवित्र कर दिया। अपने वृद्धिशील ज्ञान-विज्ञान और त्याग के कारण उनकी भगवत प्रेरणा और बुद्धिमत्ता में विकास होता गया। उन्होने ज्ञानभक्ति का पाठ उन सब को पढ़ाया जो उनके संपर्क में आए। जिन्हे उद्धव के दर्शन होते वे भगवद् भक्ति की ओर सहज ही आर्कषित होते। वे सासारीक जीवन के दुःखो से मुक्त हो गए। वे सब इस परम भक्त उद्धव के शिष्य बन गए। अन्त में उद्धव ने बदरिकाश्रम को अपना निवास स्थान बना लिया। अपनी परम श्रद्धा ज्ञान और निस्पृहता के कारण उन्होंने जन-मन को जीत लिया। उन्होने उसी का उपदेश दिया जिस पर वे स्वयं आचरण करते थे।

[ए भा XXIV—936–937]

उनकी परम दयालुता से स्निग्ध होकर सारा परिवेश परमानन्द से भर गया, दुःख का दुष्काल नष्ट होगया तथा आनन्द की सुवर्णमयी फसल की आशा तरंगित होने लगी। जब दयामय गुरु ने अपनी अनुकम्पा की वर्षा की उनके सब शिष्य आनन्दसागर में मग्न होगए।

[ए. भा. XI—12–13]

सब ही सन्तो ने साधको के सम्मुख ईश्वर साक्षात्कार का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किया है और भगवद्भक्ति के उपदेश का प्रचार निज आचरण के बलपर किया है। उन्होने अपने शिष्यो को न केवल भक्ति ज्ञान के मार्ग का प्रदर्शन किया है वरन् उनको परमानन्द कराने के लिए अपने बल से आगे बढाया है। बताओ मानवता के लिए इससे बढकर क्या सेवा हो सकती है?

—साभार श्री एम एस देशपांडे ✡

(पृष्ठ ३३ का शेष)

स्मृतसर्वाधनाशनाय
आदि पुरुषाय
परमपुरुषाय
महापुरुषाय
पुण्योदयाय
दयासागाय
पुराणपुरुषोत्तमाय
स्मितवदनाय
मितभाषिणे
पूर्वभाषिणे
राघवाय
अनन्तगुणगंभीराय
धीरोदात्तगुणोत्तमाय
मायामानुषचारित्राय
महादेवादिपूजिताय
सेतुकृते
जितवाराशये
सर्वतीर्थमयाय
हरये
श्यामांगाय
सुन्दराय
शूराय
पीतवसने
धनुर्धराय
सर्वयज्ञादिपाय
यज्विने
जरामरण वर्जिताय
विभीषणप्रतिष्ठात्रे
पर्वापगुणवर्जिताय
परमात्मने
परब्रह्मणे
सच्चिदानंदविग्रहाय
परंज्योतिषे
परधम्ने
परकाशाय
परात्पराय
परेशाय
पारगाय
पाराय
सर्वदेवात्मकाय

ॐ परस्मै नमः

श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलि समाप्ता।

(क्रमशः)

तिरुमल में राष्ट्रपति —

भारत के राष्ट्रपति श्री नील सजीवरेड्डी जी दिनांक ३–६–७९ के शाम को तिरुमल को पधारे थे। देवादाय शाखा मत्री श्री पी वी चौधरी, अन्य अधिकार तथा अनधिकार प्रमुख उनको स्वागत किये थे। तिरुमल में राष्ट्रपति को देवस्थान कार्य निर्वाहक मडलि के अध्यक्ष डा० रमेशन तथा देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर के. प्रसाद जी स्वागत किये।

राष्ट्रपति के नाम पर देवास्थान के उद्यान विभाग में को नये कोटन पौधे को "कोटन नीलम" का नामकरण किया गया। देवस्थान के उद्यान विभाग के निदेशक श्री तम्मन्ना के द्वारा इन्तजाम किये गये इस कार्यक्रम मे राष्ट्रपति ने भाग लिया।

दूसरे दिन प्रातः काल में राष्ट्रपति डा० नील सजीवरेड्डी जी सुप्रभात सेवा में सम्मिलत होकर, श्री स्वामी जी को दर्शन करके, उनके शुभासीस प्राप्त किये।

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी से उनके इस पर्यटन के छाया - चित्रो के आलबम को भेंट किया गया।

बाद को तिरुपति हवाई-अड्डे पर अधिकार तथा अनधिकार लोगो से बिदाई दी गयी।

साक्षात्कार वैभव —

तिरुपति शहर के वायव्य दिशा में ६ मील के दूर पर मंगापुरम् ग्राम में स्थित श्री बालाजी को आषाढ शुद्ध सप्तमी याने दिनांक १–७–७९ को साक्षात्कार वैभव मनाया जाता है। पुण्य कल्याणी नदी के तीर पर स्थित इस मदिर में मनाये जानेवाले इस उत्सव को देखने के लिए आसपास के ग्राम से अधिक संख्या में लोग आते हैं।

हर साल के जैसे इस वर्ष भी पूजादि कार्यक्रम अलावा हरिकथा-गान आदि कार्यक्रम तथा श्री बी ए. के रंगाराव और उनके साथी से नाट्य निवेदन होता है।

यात्री लोगों को देवस्थान के द्वारा सभी प्रकार के सुविधाओ का इन्तजाम होता है। पुराण कथा के अनुसार नारायणवन में श्री पद्मावती देवी जी को शादी करके श्री बालाजी इस मंदिर में कुछ दिन तक रहकर बाद को तिरुमल चले गये।

ताल्लपाक अन्नमाचार्य से पूजा किये गये देव विग्रहो को, उनके उत्तराधिकारियो ने इस मदिर को सौप दिया। उनको भी नित्य नैवेद्य किया जाता है।

श्री बालाजी को तथा श्री ताल्लपाक वंशजो से उनके अनुबंध, मदिर में कहीं कहीं दिखाये जानेवाले अन्नमाचार्य और तिरुमलाचार्य के शिल्पो से पता चलता है। इस पुण्य क्षेत्र को इस पर्व दिन में दर्शन करके यात्री लोग भगवान की शुभासीस प्राप्त करे।

आनिवर आस्थानम् —

तिरुमल में श्री बालाजी को मनाये जानेवाले आस्थान सेवाओ में आनिवर आस्थान सेवा एक है। कर्काटक संक्रमण के पुण्य दिन पर यानी १७ वीं जुलै को यह मनाया जाता है। उस दिन के सुबह विश्व रूप तथा तोमाल सेवा के बाद. उत्सव मूर्तिजी श्री मलयप्प स्वामी को, श्रीदेवी. भूदेवी को, विष्वक्सेन को अभिषेक किया जाता है। उसके बाद श्री बालाजी को, भूदेवियो को 'बगारु वाकिलि' (स्वर्ण द्वार) के सामने आस्थान मण्डप में स्वर्ण सर्व भूपाल वाहन पर रख देते हैं। श्री स्वामीजी सेनाधिपति को आभूषण व अलकार किया जाता है। बाद को श्री स्वामीजी को तथा देवेरियों को पुष्पमालकृत किया जाता है। दूसरी अर्चना के बाद देवस्थान के अधिकारी, आचार्य लोग, मठाधि पति, छत्र-चामरादि सहित स्वामीजी को के निवेदनो को विमान प्रदक्षिण कराके मंदिर के अदर लाकर स्वामीजी को समर्पित करते हैं। बाद को मठाधिपति श्री जिय्यगार जी स्वामीजी को नूतन वस्त्र भेंट करते है। आस्थान मंडप में एक वस्त्र श्री मलयप्प स्वामी जी को, और एक सेनाधिपति को समर्पित करते हैं। उसके बाद श्री स्वामीजी से निर्देशित कर्तव्य को पुन: निर्वहण को सूचित करने के लिए उनके पैरो के यहाँ रहनेवाले अधिकार मुहर, अन्य चाभियों को जिय्यंगार जी को देकर सत्कार करते हैं। इसी प्रकार देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी को सर्कार मुहर देकर सत्कार करते हैं।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

ति. ति. देवस्थान के निर्णायक मण्डलि के प्रमुख निर्णय

१९७९–८० के इस आर्थिक साल से देवादायनिधि को रु० २५ लाख देने का निर्णय लिया गया। यह पूरा रकम देवादाय विभाग के अभिवृद्धि के लिए खर्च कर दिया जायगा।

देवालय सहायक निधि के लिए हर साल रु० ६० लाख देने का निर्णय लिया गया। यह पूरा धन भविष्य में अन्य मंदिरो के मरम्मत के लिए, भवन निर्माण, कल्याण मण्डप, धर्मशालाएँ या राम मंदिरों आदि के निर्माण के लिए खर्च किया जायगा। तथा तिरुपति तिरुमल देवस्थान के प्रत्यक्ष रूप से असम्बन्धित अन्य सिविल निर्माण कार्यक्रमों के लिए खर्च कर दिया जायगा।

देवस्थान के कर्मचारियों को नौकरी में उन्नति के लिए निर्वहण किये जाने वाली परीक्षाओं के बारे में विचार करने के लिए कार्यनिर्वहणाधिकारी को सुझाव दिया गया। अब तो देवस्थान स्वतंत्र बन गया है। अतः उसे आर्थिक व पालना विधान स्वयं बनाना होगा। इसलिए सरकारी व देवादाय विभाग से चलानेवाली परीक्षाओं से अलग परीक्षाओं को चलाने की जरूरत है।

लड्डू का दाम कम किया गया:—

भगवान के प्रसाद लड्डू के दाम को रु० २–५० से रु० २–०० किया गया। लेकिन उसके आकार व उत्तमता में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा।

अभी पापनाशनम बाँध के निर्माण कार्य-क्रम में पूरा निमग्न होने के कारण, कल्याणी नदी के बाँध-प्रणाली या पम्प हाउस के निर्माण की कोई भी प्रणाली को नहीं लेने का निर्णय लिया गया।

देवस्थान के विविध विभागों में होनेवाले खाली जगहों में आगे से प्रख्यात खिलाडियों को नियमित करने का निर्णय लिया गया।

गुरुवायूर में कल्याण मण्डप निर्माण करने के काम को केरला कन्सट्रक्षन कार्पोरेशन को सौंप देने का निर्णय लिया गया।

आन्ध्रप्रदेश के देवादाय विभाग से हैदराबाद में चलायी जानेवाली शिल्प विद्या-लय को देवस्थान के आधीन में लेने का निर्णय लिया गया।

इस चित्र में देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद जी को भारत सरकार के डाक-तार विभाग के सचिव श्री जे. ए. दवे, से बातचीत करते हुए

तिरुमल में दि० २५–३–७९ को भारत सरकार के डाक-तार विभाग के सचिव श्री जे. ए. दवे, डाक-तार विभाग के नूतन कार्यालय भवन को नीव डाले।
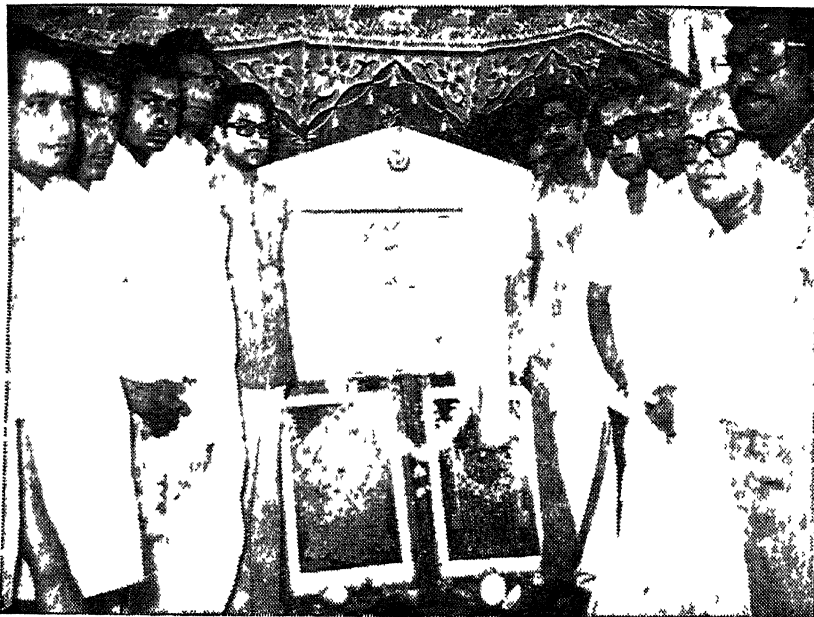
श्री वेंकटेश्वर अनाथशरणालय, श्री व्यासाश्रम, येरुपेड्डु को हर साल छात्रवृत्ति देने के लिए रु० ६,००० मंजूर करने का निर्णय लिया गया।

श्री वेंकटेश्वर नाट्यकला परिषद् को रजत जयन्तुत्सव मनाने के लिए रु० २०,००० दान देने का निर्णय लिया गया।

ति.ति. देवस्थान अपने अधिक निधियों को बदल कर अन्य मंदिरों के लिए आर्थिक सहायता देता रहा है, उसे बदलने का जी. ओ. एम. एस. नं ४३४, रेविन्यू (एन्डो-III) विभाग, तारीख १३-३-७९ विधि नं १०१७९ के अनुसार रोक दिया गया। *

मासिक राशिफल

जुलाई १९७९

*डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष

(अश्विनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद–१)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा धन हानि या झगडे या सतान से अलगाव। गुरु के द्वारा धन-प्राप्ति, श्रृंगार व नूतन वस्त्र या नूतन घर या वाहन प्राप्ति या सतान प्राप्ति। कुज के द्वारा झगडे या नौकरी मे अशाति व अस्वस्थता या घर में चोरी। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में धन प्राप्ति व ओहदा, बाद को अस्वस्थता। बुध के द्वारा घर मे सतोष। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति व विजय या नूतन वस्त्र प्राप्ति या नूतन मित्र प्राप्ति।

वृषभ

(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा संतान से अलगाव या धनहानि या मित्रो से झगडे। गुरु के द्वारा निराशा। कुज के द्वारा अशाति। बुध के द्वारा नये मित्रो की प्राप्ति, लेकिन अपने बुरे प्रवर्तन के कारण नौकरी मे अशाति। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग मे धन हानि या नेत्र पीडा या धोखा, बाद को धन-प्राप्ति व उन्नति। शुक्र के द्वारा पूरा महीना भलाई या खाद्यापदार्थ प्राप्ति या गौरव या नूतन वस्त्र प्राप्ति या विजय या सतान प्राप्ति।

मिथुन

(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा धनप्राप्ति या नूतन वस्त्र या स्वस्थता या घर में सतोष या वाहन प्राप्ति। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति। कुज के द्वारा धन हानि या अशाति। बुध के द्वारा धन प्राप्ति, लेकिन अगौरव। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग मे उदर पीडा या या धन हानि या प्रयाण व प्रयास। शुक्र के द्वारा पूरा महीना भलाई, २५ तक प्रेम, बाद को धन प्राप्ति, गौरव, नूतन वस्त्र या खाद्य-पदार्थ या घर मे संतोष या सतान प्राप्ति।

कर्काटक

(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा धन हानि। गुरु के द्वारा धन हानि या झगडे या अगौरव या अशाति। कुज के द्वारा पूरा विजय लेकिन बुरे सलाह के कारण धन हानि या झगडे। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में धनहानि, बाद को प्रयाण व प्रयास या उदर पीडा। शुक्र के द्वारा २५ तक उदासीनता, बाद को श्रृगार व प्रेम।

सिंह

(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूव फल्गुनि)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा सतान से अलगाव या प्रयाण व प्रयास या धन हानि या सतान या रिश्तेदारो से झगडे। गुरु के द्वारा प्रयाण तद्वारा अशाति। कुज के द्वारा पूरा महीना भलाई, तद्वारा धन समृद्धि। बुध के द्वारा शत्रु के कारण अशाति या अस्वस्थता या अगौरव। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग मे धन प्राप्ति व विजय बाद को उदासीनता। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति, अच्छे मित्र व नूतन वस्त्र प्राप्ति।

कन्या

(उत्तरा पाद २,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा अशाति। गुरु के द्वारा धन समृद्धि। कुज के द्वारा अगौरव या धनहानि। बुध के द्वारा प्रेम व अच्छे मित्र या वाहन या सतान प्राप्ति। रवि के द्वारा पूरा महीना भलाई, तद्वारा स्वस्थता, विजय, गौरव व धन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा २५ तक बुराई, तद्वारा झगडे, या अपमान, बाद को अच्छे मित्र व नूतन वस्त्रप्राप्ति।

तुला

(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा सतोष। शनि के द्वारा धन प्राप्ति या श्रृगार। गुरु के द्वारा धनहानि व अगौरव। कुज के द्वारा बुराई, तद्वारा धन हानि, अपमान व शारीरक चोट। बुध के द्वारा धन प्राप्ति व शत्रुओ पर विजय या श्रृंगार या नूतन घर प्राप्ति। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में अस्वस्थता, निराशा या धनहानि, बाद को विजय। शुक्र के द्वारा २५ तक भलाई, तद्वारा धार्मिक प्रवर्तन या धनप्राप्ति या नूतन वस्त्र प्राप्ति या पत्नी को सतोष, बाद को झगडे या अगौरव।

वृश्चिक

(विशाख पाद-४, अनुराधा, ज्येष्ठ)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि, अगौरव या वृद्ध लोगो की मृत्यु से कर्म काण्ड। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति व विजय या

खाद्य पदार्थ प्राप्ति या सतान प्राप्ति । कुज के द्वारा पत्नी से झगडे या नेत्र पीडा या उदर पीडा या अस्वस्थता । बुध के द्वारा प्रयत्नो मे असफलता । महीने के पहले भाग मे रवि के द्वारा पत्नी को असतोष या अस्वस्थता । बाद को धन हानि, निराशा व अस्वस्थता । शुक्र के द्वारा पूरे महीने भलाई, तद्वारा नूतन वस्त्र, या श्रृगार या नूतन घर प्राप्ति, धार्मिक प्रवर्तन, धन प्राप्ति व पत्नी का सतोष ।

धनुः

(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के द्वारा अधार्मिक प्रवर्तन । शनि के द्वारा अस्वस्थता या झगडे, या अधार्मिक प्रवर्तन गुरु के द्वारा आदोलन, अस्वस्थता या प्रयाण व प्रयास । कुज के द्वारा पूरे महीने भलाई तद्वारा शत्रुओ पर विजय या धन समृद्धि या स्वास्त्य या सुखी मन । बुध के द्वारा भलाई, तद्वारा विजय या धन, या नूतन वस्त्र या सतान प्राप्ति। रवि के द्वारा महीने के पहले भाग मे प्रयाण व प्रयास, या उदर पीडा, बाद को पत्नी को असतोष या अस्वस्थता । शुक्र के द्वारा २५ तक अशाति, या स्त्री के कारण आदोलन, बाद को नूतन वस्त्र प्राप्ति, या श्रृगार या नूतन घर प्राप्ति ।

मकर

(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४ श्रवण, धनिष्ठ पाद १, २)

राहु के द्वारा अशाति । शनि के द्वारा पत्नी तथा सतान मे अलगाव । गुरु के द्वारा भलाई, तद्वारा श्रृगार व सुख सतोष । कुज के द्वारा शत्रुओं के कारण अशाति या अस्वस्थता या सतान के कारण आदोलन । बुध के द्वारा झगडे । रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में स्वास्त्य, विजय-प्राप्ति । बाद को प्रयाण व उदर पीडा । शुक्र के द्वारा पूरा महीना बुराई, तद्वारा अगौरव, अस्वस्थता या स्त्री के कारण अशाति ।

कुंभ

(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे । शनि के द्वारा प्रयाण। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति । कुज के द्वारा उदर पीडा या बुखार या रक्त-दोष । बुध के द्वारा विजय व ओहदा । रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में शत्रुओं के कारण आदोलन या अस्वस्थना, बाद को स्वस्थता व शत्रुओं पर विजय । शुक्र के द्वारा २५ तक बडे लोगो की आशीर्वाद प्राप्ति या रिश्तेदारो का आगमन या धन या मित्र या सतान प्राप्ति, बाद को अस्वस्थता व अगौरव ।

मीन

(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति । शनि के द्वारा स्वस्थता, शत्रुओ पर विजय या पत्नी को सतोष गुरु के द्वारा भलाई, तद्वारा धन समृद्धि या नूतन वस्त्र या श्रृगार या नौकर या नूतन घर या सतान या वाहन प्राप्ति । कुज के द्वारा सतान के कारण अक्रम रूप मे धन प्राप्ति । बुध के द्वारा पत्नी तथा सतान से झगडे । रवि के द्वारा अस्वस्थता या शत्रुओ का डर । शुक्र के द्वारा अच्छे मित्र प्राप्ति, बडो की प्रशंसा, रिश्तेदारो का आगमन, धन प्राप्ति या सतान प्राप्त ।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

बाद को कर्पूर - हारति आदि कार्यक्रम, नैवेद्य आदि होता है । यह तो सिर्फ मंदिर के आतरगिक उत्सव होने पर भी, अधिकार समर्पण तथा स्वामी जी के कृपा - कटाक्ष से पुन अधिकार स्वीकार जैसे मुख्य कार्यक्रम के होने से अतिवैभव से मनाया जाता है ।

पवित्रोत्सव :—

कल्याण गुण निधि तिरुमल श्री बालाजी को हर साल श्रावण शुद्ध दशमी से शुरू होकर एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी में तीन दिन तक याने ४, ५,६ आगस्त को पवित्रोत्सव मनाया जाता है । पवित्रोत्सव का अर्थ होता है कि रेशमी की डोरियो से बनायी गयी मालाओ को श्री बालाजी को तथा उनके परिवार देवताओ को समर्पित करना । आगम शास्त्र में इस प्रकार बताया गया है कि अवतार पुरुष भगवान को नित्यपूजादि कार्यक्रम शास्त्र के अनुसार करना ब्रह्मादि देवो को भी संभव नहीं होगा । तभी तो अल्पज्ञ मानव से करने वाले पूजादि कार्यक्रम में दोष अवश्य होगे ही । इस प्रकार अज्ञान के कारण सम्भव दोषो को इस पवित्रोत्सव से निवारण कर सकते है । इस लिए हर साल स्वामीजी को पवित्रोत्सव मनाया जाता है । और मानव श्री भगवान को इस पवित्रोत्सव करने से या कराने से, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त कर सुख से जीवन बिता सकते है ।

ग्राहकों से निवेदन

निम्नलिखित संख्यावाले ग्राहकों का चदा ३१–८–७९ को खतम हो जायगा कृपया ग्राहक महोदय अपना चदा रकम मनीआर्डर के द्वारा जल्दी ही भेज दें ।

H 92 (687), 95 (691), 96 (692), 97 (693), 101 (697), 103 (699), to 108 (704), 113 (709), 132 (731)

नोट : कोष्ठक में पुरानी सख्या दी गयी हैं।

निम्नलिखित पते पर चदा रकम भेजें :

संपादक,
ति· ति· देवस्थानम्,
तिरुपति.

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M A. AND PRINTED AT T. T. D. Press, By M Vijayakumar Reddy, Manager, T T D Press, Tirupati

दिनाक १४–५–७९ को प्रमुख चित्रकार श्री बापू को देवस्थान के आस्थान विद्वान पद से सन्मानित किया गया ।

दिनाक १४–५–७९ को प्रमुख सगीत कलाकार श्री सध्या-वदन श्रीनिवासरावको आस्थान विद्वान पद से सन्मानित किया गया ।

दिनाक १४–५–७९ को प्रमुख नृत्य कलाकारिणी डा० यामिनि कृष्णमूर्तिजी को, आस्थान विद्वान पद से सन्मानित किया गया ।

तिरुमल यात्रियों को सुविधाएँ

* * * * *

* सभी तरह के लोगों को रहने के लिए मुफ्त में दिये जानेवाली धर्मशालाएं या उचित दरों पर मिलनेवाले काटेजस का प्रबंध

* श्री बालाजी के दर्शन के लिए जानेवाले यात्रियों के क्यू षेड्स में हवा तथा प्रकाशमान सुविशाल कमरों का प्रबंध।

* क्यू षेड्स में ही काफी बोर्ड के द्वारा नाश्ता का प्रबंध।

* उचित दरों पर दही-भात के पोटलियों का विक्रय।

* यात्रियों को बिना बाहर आये ही, क्यू षेड्स के पास ही सण्डास का प्रबध।

* आंध्र प्रदेश सरकार के डेयरी डवलपमेंट कार्पोरेशन के द्वारा शुद्ध दूध आदि का विक्रय।

* यात्रियों को पढने के लिए देवस्थान से प्रकाशित ग्रंथ तथा भगवान बालाजी व पद्मावती देवी के चित्रपटों का विक्रय।

* यात्रियों को मनोरंजन तथा विश्राम के वास्ते टेलिविजन का प्रदर्शन व संगीत का प्रसार।

* क्यू लाईन में तथा तिरुमल को पैदल जाने की रास्ते में ७ वी. मील पर चिकित्सा की सुविधा।

* सामान व चप्पल को रखने के लिए विशेष सुविधाएँ।

* तिरुमल के सेन्ट्रल रिसेप्षन आफिस से अन्य प्रातों को आटो रिक्शा (Auto Rickshaw) की सुविधा।

* तिरुमल को पैदल जानेवाले यात्रियों के सामान को तिरुमल तक पहुँचाने का प्रबध।

* धोखेबाज या दलालों से रक्षा करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी को मुखद्वार पर नियुक्ति।

* क्यू षेड्स के यात्रियों की शिकायतों को जाँच - पडताल करने को तथा आवश्यक सुविधाओं का इन्तजाम करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी तथा कर्मचारियों की नियुक्ति।

* देवस्थान से दिये जानेवाले ऐसे अन्य बहुत सुविधाएँ है।

सूचना :— तिरुमल में दि २–४–७९ से डाकघर रात को ८–३० बजे तक काम करती है। इसके अलावा मुख्य डाकघर रात के १०–३० से २–०० बजे तक काम करती है। अगर चाहें तो श्री बालाजी के भक्त अन्नमाचार्य के डाक-मुहर अपने कार्ड या कवरों पर छपवा सकते हैं।